झरोखे मन के

सौ. लता सुरेन्द्र सिंघई

झरोखे मन के

– लता सिंघई

सेतु प्रकाशन
अहमदाबाद

कृति	:	**झरोखे मन के**
आशीर्वाद	:	**राष्ट्र संत मुनिश्री 108 पुलकसागर जी गुरुदेव**
प्रेरणा	:	अन्तर्मन
सम्पादन	:	**श्री रमेशचन्द्र जी. मनया** (भोपाल)
समर्पित	:	स्नेही माँ को
संस्करण	:	प्रथम संस्करण, 2013
		द्वितीय संस्करण, 2020
©	:	सर्वाधिकार सुरक्षित
प्राप्तिस्थान	:	**सौ. लता सुरेन्द्र सिंघई**
		कस्तूरी, 12, गणेश विहार, बडनेरा रोड़, अमरावती (महाराष्ट्र)
		मो. 98230 21185
मूल्य	:	रु 60.00
प्रकाशक	:	***सेतु प्रकाशन*** 9, माधव पार्क, -II, वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद - 382418 (M) 94276 22862 Email : vijay.tiwari1998@gmail.com
कम्प्यूटर टाइप-सेटिंग	:	***फागुन ग्राफिक्स*** 48, पूर्वीनगर सोसायटी, भाडुआतनगर के पास, घोडासर केनाल, घोडासर, अहमदाबाद - 380 050 (M) 09255 04661

समर्पित...

स्नेही माँ को

जीवन की सांध्य बेला में
तुम्हारे आगे चल
तुम्हारी राह के काँटे चुन
तुम्हें सुकून देना चाहती हूँ
माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं

- लता सिंघई

आपकी बेटी...

संकीर्ण रिश्तों से कोई आस नहीं,
उदार जीवन का जिन्हें एहसास नहीं
संकीर्णता निशाकरसी रिश्तों को चोर बनाती है
उदारता दिवाकरसी जीवन में भोर लाती है।

– लता सिंघई

सम्पादकीय

झरोखे मन के

भावनाओं का उत्स होती है "कविता" अभिव्यक्त हो जाएँ तो उत्सव की सी अनुभूति होने लगती है। तृप्ति का आनन्द, अतृप्ति की वेदना, कामनाएँ, घनीभूत पीड़ाएँ, हृदय में उमड़ती घुमड़ती रहती हैं, मन को मथती रहती हैं, अभिव्यक्त होने के लिए बेचैन-बेकरार। यही मनोभावनाएँ लेखनी की राह जब कागज पर उतर आती है तो बन जाती है सच्ची कविता।

वेदना स्वयं की हो यह आवश्यक नहीं। कवि का संवेदनशील हृदय जब किसी दूसरे की वेदना का अनुभव करता है तो वह भी दर्द से तड़प उठता है। आदि कवि वाल्मीकि ने जब क्रोंच युगल में से एक का वध होते देखा तो उनका संवेदनशील, पर-दुःख-कातर हृदय वेदना से चित्कार कर उठा। उनकी वही चोट पहली कविता बनी-माँ निषाद...

कविता लेखन की कला दैवी उपहार है God gift है। यह एक जन्म जात प्रतिभा है इसे आप Cultivate नहीं कर सकते। इसे किसी शिक्षण शिबिर में या workshop में सीखा नहीं जा सकता। प्रस्तुत संकलन की सृजनहार श्रीमती लता सिंघई में वे सभी गुण अपनी पूरी गरिमा पूर्ण विकसित अवस्था में विद्यमान हैं जो एक कवि में अपेक्षित हैं। श्रीमती लताजी संवेदनशील हृदय की स्वामिनी है। वे विदुषी हैं, पर दुःखकातर हैं, **"दर्द हो तुझको तो आसूँ मेरी आँखों से बहें"** उदारता, गुण ग्राहकता विवेक और विद्वत्ता सभी कुछ है उनमें। उन्होंने एक स्थापित मिथक को भी झुठलाया है कि सुन्दरता और बुद्धि एक साथ नहीं मिलते।

उनके अन्दर का कवि दर्दमन्द दिल होने की उस शर्त को भी पूरा करता है जो उस्तादों ने कहा है –

“दर्द को दिल में जगह दे “अकबर”

अक्ल से शायरी नहीं आती”

अध्यात्म की छाया में संसार की नश्वरता का भी पूरा-पूरा एहसास है उन्हें । अपने पहले ही गीत **“मेरे गीत”** में वे संसार को सावधान करती हुई सन्देश देना चाहती हैं - **“कौन जाने किस डगर पर धड़कने रुक जाएँगी”** इसलिए उनका कहना है । **“मानवता से भरी जिन्दगी संग हमारे जाएँगी।**

वे स्वयं एक नारी हैं अतः सृजन की पीर और सृजन का आनन्द खूब जानती हैं । नारी मन की व्यथा, लांछना, हमेशा हेय दृष्टि से देखे जाने से उत्पन्न हिनता की ग्रन्थि को अब और सहने से इन्कार करते हुए वे राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त की कथनी **“अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी आंचल में है दूध और आँखों में पानी”** को नकार देती हैं। वे भारतीय नारी में नया जोश, नई उमंग, नया आत्मविश्वास, भरते हुए उन्हें नये नये रास्ते सुझाती हैं । उनकी कविताएँ **“हे नारी”**, **“भारतीय नारी”** और **“नारी मन”** उनके इन्हीं मनोभावों को प्रकट करती हैं । वे अपनी आन्तरिक वेदना को छुपाकर उन्हें प्रोत्साहित करते हुए मार्गदर्शन देती हैं । नारी संगठनाओं में सम्मिलित होकर तथा गलतफहमी का शिकार होकर मिथ्या आत्मप्रशंसा में Snobbery डूब जाना उचित नहीं हैं ।

“सारे जहाँ का दर्द हमारे जिगर में है” अर्थात् कवि व्यष्टि होते हुए भी अपनी सोच का अपने व्यक्तित्व का विस्तार सम्पूर्ण समष्टि पर कर लेता है और समष्टि की समस्याएँ अपने व्यक्ति की बनाकर प्रस्तुत कर देता है । संपूर्ण मानवता उस एक व्यक्ति में समाहित हो जाती है तब जमाने का दर्द कवि का और कवि की सोच पूरी मानवता की सोच बन जाती है । **“कहाँ खो गई वो संवेदना”** में कवि बात को ऐसे प्रस्तुत करता है जैसे उसकी अपनी बात हो किन्तु सारी दुनिया को लगेगा कि अरे, यह तो मेरे घर की बात है कवि को कैसे पता चला । दरअसल आज के भौतिक सुख,

सुविधाओं और उन्हें अर्जित करने के आर्थिक दबावों तथा पश्चिमी भौतिकवादी संस्कृति की आँधी में भारतीय सांस्कृतिक जीवन मूल्य, आत्मीयता, मानवीय पारिवारिक रिश्ते सभी धीरे धीरे समाप्त होते जा रहे हैं । संयुक्त परिवारों का स्थान एकल परिवारों ने ले लिया है । माता-पिता अनुपयोगी "वस्तु" हो गए हैं । वे पूछती हैं – **"भूल कहाँ हुई भइया, तुम्हीं बताओ, चूक कहाँ हुई परवरिश में तुम्हारी"** जमाने में फैली झूठ बुराइयाँ, बेईमानी और संसार की नश्वरता कवि के कोमल हृदय पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती है, उससे उसका संवेदनशील मन दार्शनिक हो जाता है । उसे इन बातों में छुपी सच्चाई समझ में आने लगती है और वह सिहर कर संसार को सावधान करता है । सच्चा कवि समाज का पहरेदार भी होता है । **"ऊँचाई"** में वे कहती हैं – **"ऊँचे पद और ऊँचे नाम, ऊँचाई पर होता है एकाकीपन और अभिमान"** वे आगे जीवन की सच्चाई बताते हुए सावधान करती है –

जल जीवन देता है लेकिन ऊँचाई पर जम जाता है ।
जीवन और सूनेपन का ये कैसा नाता है ॥

"यह दुनिया" की यह पंक्तियाँ **"चांद, सितारे नदियाँ, जंगल, सबको देखे एक समान-जाति पाति प्रान्त में बँटकर हम बन जाते क्यों शैतान"** हमें झकझोर देती है । सोचने को विवश कर देती है ।

प्रेम के समस्त रूप विशेषत: मिलन और विरह कविता को अमरत्व प्रदान करते हैं । प्रेम अपने साकार प्रभु से हो या निराकार परमात्मा से हो, प्रेयस् से हो पद प्रतिष्ठा, पैसा या परिवार से हो प्रेम बिना जीवन फीका और अधूरा है –

इश्क को दिल में जगह दे जाहिद । (धर्मोपदेशक)
"बन्दगी से ख़ुदा नहीं मिलता ॥ (पूजा)

शायद इसी कारण संकलन की 19 कविताएँ प्रेम के विभिन्न रंगों में रंगी हैं । **गुड़िया रानी, चाहत के शिखर, पुरस्कार, रिश्ते, माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं, सखे, प्यारे प्यारे दिन, नन्हें लम्हें, नन्हीं सी फांस, अजनबी, हमसफर, संवेदनाओं का सच, सपनीली होली, मानस प्रियतम, दिल ये चाहे, दिल भटके मुसाफिर के नाम, मेरी लाडो ।**

लता जी एक माँ भी हैं और पुत्री भी, इसलिए उनकी कविताओं में व्यक्त ममता और कर्तव्यनिष्ठा उनके अन्त:करण की ही छाप है ।

सर्वव्यापी प्रेम की सतरंगी छटाओं को झलकाती इन कवितओं में मिलन, विरह, लाड, प्यार, महत्वाकांक्षाओं का सुनहरा संसार, दिल को धड़काने वाली और सांसो को महका देने वाली यादें मनभावन अतीत, स्मृतियों के दंश, निष्काम प्रेम, (Platonic Love) प्रेम के चटकीले और दर्दीले सभी रंग आपकी भावनाओं को अनुरंजित करने में समर्थ होंगे ।

संकलन की सभी कविताएँ व्यंग्य और मुक्तक पाठकों को आकृष्ट करते हैं, किन्तु दो-चार स्थानों पर तो वे कविताएँ श्रीमती लता जी की बहुमुखी प्रतिभा की प्रशंसा करने के लिए बाध्य कर देती हैं । उनकी सोच, जीवन की कठोर वास्तविकताओं की पकड और उन्हें सरलता से अभिव्यक्त करने की कला हमें बाँध लेती है – **"एक बरस पार हो गया"** में हाथ की उँगलियों की सन्धियों में से प्रतिपल फिसलती रेत की तरह ही पल पल करके बीतती जाती जिन्दगी को देख कर उनके अन्दर का दार्शनिक जैसे उसाँस भर कर कहता है **"जीवन बीता, रीता मन, जीवन हाथ से निकल गया । सच एक बरस पार हो गया, मृत्यु के पास हो गया ।"** और मृत्यु की अटल सच्चाई से रु-ब-रु करा जाता है ।

एक और कविता **"माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं"** की अन्तिम पंक्तियाँ **जीवन की संध्या बेला में तुम्हारे आगे चल कर, तुम्हारी राह के काँटे चुनकर तुम्हें सुकून देना चाहती हूँ"** ऐसी निष्ठा, माता-पिता के प्रति यह

कर्तव्य बोध अब कहाँ देखने को मिलता है । **"कन्या भ्रूण हत्या"** से सम्बन्धित कविताओं के इस बौद्धिक दौर में हमने गर्भस्थ कन्या की करुण गुहार तो पढ़ी और **"तुम्हारी राह के काँटे बुहारने"** की सीधे हृदय से निकले उद्‌गार पहली बार पढ़ने को मिले । यह दुर्लभ उदात्त भाव सिद्ध कर देता है कि कविता हृदय की कोमल संवेदनाओं की अभिव्यक्ति है, उसमें बुद्धि की मिलावट स्वीकार्य नहीं । ऐसी ही पंक्तियों को संकलन की उपलब्धि कहा जाता है ।

एक और मनोवैज्ञानिक और अनुभूत सत्य है कि यौवन के मद भरे दिनों में कभी कहीं किसी अनजानें से सहसा नजर टकरा कर ठहर जाती है और हम यह जानते हुए भी कि **"जाने तुम को खबर कब होगी"**, उन मखमली, कोमल, मृदुल पलों को आधार बनाकर भावनाओं का ऐसा आत्मीय ताना-बाना बुन लेते हैं कि वह क्षण भर की मुलाकात आकाश की भाँति विस्तारित होकर हमारे व्यक्तित्व पर पूरी तरह छा जाती है । फिर यह जानते हुए कि वह कोरी कल्पना है, हम उसे सच मान लेते हैं इसलिए कि झूठ मानने का मन ही नहीं करता **"पूछती हूँ उन नन्हें लम्हों से सवाल कहीं तुम मेरे सपनों के छलिया तो नहीं ?"** कवि की तरह आपको भी अपने गदराये यौवन के बौराये दिनो में खींच ले जाए तो आश्चर्य नहीं ।

संकलन की एक अन्य उल्लेखनीय रचना है **"महामहिम-फिर मुस्कुराई"** देश की प्रथम महिला राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती प्रतिभा ताई पाटिल लताजी के अम्बानगर अमरावती की बहू हैं । अपने गाँव की इस "प्रतिभा" पर गर्व करना लताजी का पहला हक है । इशारों इशारों में ही वे महामहिम राष्ट्रपति जी द्वारा विश्व के सबसे बड़े प्रजातन्त्र भारत की सर्वोच्च शासनाध्यक्ष के रूप में उत्तरदायित्वों से भरे कठिन "कर्तव्यों" का कुशलतापूर्वक निर्वाह करने और देश की तीनों सेनाओं की सर्वोच्च सेनापति के रूप में आयु के सात वें दशक में भी युद्धक विमान Fighter Plane "उड़ाने" का कीर्तिमान

रचने का उल्लेख कर जाती हैं, यह लताजी की प्रतिभा का ही कमाल है ।

मनोज्ञ मुनिश्री पुलकसागर की प्रेरणा से स्थापित राष्ट्रीय महिला जागृति मंच की राष्ट्रीय महामन्त्री श्रीमती लता सिंघई जी बहुमुखि प्रतिभा की धनी हैं । कहा जाता है कि सबको सन्तुष्ट करना असम्भव है किन्तु देशभर में फैली 3000 से अधिक मंच की महिला सदस्यों को एक सूत्र में बांध कर रखने वाली लताजी ने सिद्ध कर दिया है **"असम्भव"** कुछ भी नहीं है ।

इसी प्रकार घर के उद्योग के संचालक के रूप में उनकी प्रशासनिक क्षमता भी स्वयं सिद्ध है । राष्ट्रीय, राज्यस्तरीय तथा नगर की अनेक सामाजिक, साहित्यिक, संस्थाओं की पदाधिकारी रहते हुए भी वे अच्छी कविता कर लेती हैं । इससे उनकी बौद्धिक क्षमता ऊर्जा और सहृदयता की सराहना करनी पड़ती है । अपनी काव्य प्रतिभा के लिए वे राज्य शासन से और अनेकों संस्थाओं द्वारा अनेक बार पुरस्कृत और सम्मानित हो चुकी हैं ।

नव रसों से भरे इस काव्य संकलन के लिए श्रीमती लताजी को हार्दिक बधाई प्रस्तुत करते हुए मैं इस बात के लिए भी उनके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि अपने आसपास विद्वानों तथा साहित्यकारों की भीड़ में से संकलन के सम्पादक कार्य के लिए उन्होंने मुझ पर अनुग्रह किया ।

"क्या तो मेरी नमाज क्या तौबा
बख्श देने के सौ बहाने है ।

मेरा विश्वास है कि यह कविताएँ आपको आनन्द की अनुभूति कराएँगी।

भोपाल, 14-05-12

कल्पतरू हाउस,
18, इतवारा, भोपाल,
Mob. 093011 74614
Email : kmlerm@gmail.com

- रमेशचन्द्र मनयां जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अ.भा.दिग. जैन विचार मंच

प्रस्तावना...

झरोखे मन के

अर्न्तमन की सशक्त अभिव्यक्ति है प्रस्तुत कृति

श्रीमती लता सिंघई जी नैसर्गिक प्रतिभा समन्वित आन्तरिक दिव्य चेतना एवं संवेदना से ओतप्रोत कवयित्री हैं । उनमें शरद्‌कालीन पूर्ण चन्द्रमा की भांति विनम्रता, शालीनता है । जिसकी मनभावन स्निग्ध किरणो में विशेष आनन्द है उनकी निश्छलता, सरलता, उदारता, आस्तिकता, सब कुछ उनकी कविताओं में झलकता है और छलकता है ।

लता सिंघई जी की काव्य सृजन पद्धति का वैशिष्ट्य है कि वे आज के युग-परिवेश से, सामाजिकता से और मानवीय चरित्र के विघटन एवं पतन से जब टकराते हैं तो प्रतिक्रिया की यथावत् अभिव्यक्ति करना चाहती हैं । वे काव्य के अस्वाभाविक रुप एवं रहस्यलोक में विश्वास न कर सारल्य एवं प्रसादत्व पर ध्यान केन्द्रित करती हैं । उनका कविमन मानवीय मूल्यों को अलौकित करने का लक्ष्य सामने रखकर चलता है । वे मूल्यों के ह्रास एवं भ्रष्टता के विरुद्ध लेखनी उठाती हैं, तो सत्य अनावरण हो जाता है और कर्म एवं विश्वास की प्रकाश पुंजमयी अखंड लौ प्रदीप्त हो उठती है ।

विभिन्न प्रकार के शब्द-वर्गो से, भाषा के सरल प्रयोग से, सशक्त चयन से लताजी की अभिव्यक्ति प्रौढ़तम बन जाती है, कविता में सरलीकरण की अधिकता उनका दोष नहीं, सहजता है । वे मन से लिखती हैं और मन की लिखती हैं । उनका इससे पूर्व प्रकाशित काव्य-संग्रह 'सांझ ढले' प्रशंसनीय रहा । उनकी निरन्तरता ने ही उन्हें लोकप्रियता दी है । आज इस नये संग्रह 'झरोखे मन के' की प्रस्तुति भी उनको यशस्वी बनाएगी इसमें सन्देह नहीं।

कविमना लताजी का मानववादी दृष्टिकोण आशावाद का भरपूर संदेश देता है और नवनिर्माण का आह्वान भी करता है, उनका विश्वास है, नया प्रकाश, नया निर्माण लेकर आता है । अंधेरा यदि प्रकाश की उज्जवल चादर से ढक दिया जाता है तब कहीं छिपी सरस्वती की धारा उसके अंधेरे को भीतर ही भीतर धो डालती है और इसीलिए उनकी कलम झंकारती है –

तलहटी पर अंधेरा है तो क्या हुआ
शिखर तो भोर का आदी है
दो कदम चली हो तुम
सफर अभी बाकी है
सफलता की कुछ चोटियों को छुआ है तुमने
शिखर को छूना अभी बाकी है...

श्रीमती लता सिंघई सम्बन्धों को गहराई से अनुभव करती हैं उनकी संवेदना रिश्तों में जीती है, माँ, बिटिया या प्रियतम कोई भी हो सबके साथ उनकी आत्मीयता है – माँ के प्रति उनकी भावना –

जीवन की सांध्य बेला में
तुम्हारे आगे चल
तुम्हारी राह कें काँटे चुन
तुम्हें सुकून देना चाहती हूँ
माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं

लता जी की संवेदना का क्षेत्र व्यापक है, 'क्षण क्षण बीत चला', 'नन्हें लम्हे', 'समय' सब पर उनकी दृष्टि है। वे अपने 'दिल', 'संवेदनाओं के सत्य', 'ये तस्वीरें' सभी को अपने शब्दों के धागे में पिरोती हैं। भोली-भाली जनता को देख उनका मन रोता है, क्योंकि कवि देश और समाज का प्रतिनिधि होता है। लता जी भी राष्ट्रवादी हैं, संस्कृति से प्यार करती हैं। वे कहती हैं –

जनता के मत को लूट
नेता बनते हैं
जनता के मन को लूट
अभिनेता बनते हैं
जनता के धन को लूट
राजनेता बनते हैं

कवयित्री के अन्तर्मन का दर्द परिस्थितियों की विपरीतता पर आह बनकर रह जाता है। यह मानवमात्र को ही सचेत करती हैं और कहती हैं -

मुस्काना फूलों से सीखो
संग संग हम रहना सीखे
जीवन को त्यौहार हम समझे
प्रभु का उपहार हम समझे

लता जी का काव्य समसामायिक युग संदर्भो एवं मानव जीवन मूल्यों में आस्था का काव्य हैं उनकी कविताएं मानवता के शिलान्यास की माँग करती हुई लोगों को इन्सान बनने की प्रेरणा प्रदान करती है। उनकी कविता में दिव्यता भी अद्भुत है। दैवीय धरातल पर पतित से पावन बनना उन्हें अभीष्ट है वे धार्मिकता आस्तिकता से झंकृत हैं। प्रभु से प्रार्थना करती हैं –

हे प्रभु
सुन लिजिए मेरी प्रार्थना
इस जीव में जगाओ
ऐसे भाव, दो ऐसे कर्म
ऐसी पर्यायों से मुक्त हो जायें
पतित से पावन राह पर
अपने कदम बढ़ाये
अपने कदम बढ़ाये

वे सामाजिक दायित्व बोध के गुलाब जगह जगह रौपना चाहती हैं, जिससे मानव समाज महक उठे। मूल्यों को प्रतिष्ठित करने के सजग दायित्व बोध के प्रति वे पूर्णतः सजग हैं -

भूमि तभी उपजाऊ होती है
जब श्रमिक परिश्रम से खोद जमीन
बीज बोता है
फसल तभी लहलहाती है खेतों में
जब बादल नीर बन बरसता है।

लताजी संस्कृति और परम्परा से जुड़ी हैं। उनकी काव्य सर्जना में भावपूर्ण अभिव्यक्ति है। वे काल्पनिक उड़ानें नहीं भरती, न ही उपमाओं व अलंकारों से कविता को मढ़ती हैं वे खुली आँखों से वर्तमान को देखती हैं। वे सीधी सरल

भाषा में भावनाओं को प्रस्तुत करती हैं । नारी होने के कारण नारी के प्रति उनका झुकाव स्वाभाविक है । वे नारी मन की सच्चाई को अच्छी तरह समझती हैं -

नारी मन की थाह
किसी ने ना पाई
किसे के दिल का राज
वह ना छिपा पाई
किन्तु अपने दिल का राज
किसी को ना बता पाई
यही है नारी मन की
अनसुलझी सच्चाई

आगे वे कहती हैं -

रिश्तों की चादर में लिपटी
ममता का स्पर्श तुम्हीं हो
हवनकुण्ड की पवित्र अग्नि के
मंत्रो की पवित्रता तुम्हीं हो ।

वस्तुतः लता सिंघई जी की कविताएँ, कविताएँ भर नहीं हैं । इससे अधिक उनकी कविताएँ तारों की झंकार हैं, जो संवेदनशील दिलों की हृदयतन्त्री को झंकृत करती हैं । कहीं कहीं उनकी कविताएँ निजी सम्बन्धों एवं निजी संवेदनाओं को भी प्रकट करती हैं । किन्तु अधिकांश कविताएँ ऐसी होती हैं जो मानव मन की दशा को प्रेरक दिशा देती हैं तथा समस्या का समाधान भी ढूँढती हैं ।

अन्ततः संग्रह की सभी कविताएँ किसी-न-किसी रूप में समाज की किसी-न-किसी भूमिका को प्रस्तुत करती हैं । निश्चय ही इन कविताओं में समय झाँकता है, राष्ट्र झाँकता है, समाज झाँकता है और व्यक्ति झाँकता है । लता जी आशावादी हैं, कर्मठ भी हैं, व्यवसाय से जुड़ने के उपरान्त भी उनकी कोमलता और सूक्ष्म संवेदनाएँ प्रशंसनीय हैं । उनकी लेखनी की दिव्यता निरन्तर वृद्धिगत हो । यह संग्रह संग्रहणीय और प्रशंसनीय बने इन भावनाओं के साथ ।

273/1/1, आदर्श नगर, गुड़गाँव-122001 — **डॉ. नीलम जैन**

प्रस्तवन

इस विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय कला यदि कोई है तो वो है साहित्य विद्या और इसमें भी काव्य विद्या की वैश्विक लोकप्रियता को कोई भी नकार नहीं सकता है । ईश्वर के असीम आशीर्वाद और उसके अनहद आनन्द, परम आनन्द को प्राप्त करने का सबसे सीधा, सरल और आसान तरीका है काव्य विद्या । गीत, ग़ज़ल और शेरो-शायरी के माध्यम से हम ईश्वरीय आशीर्वाद और परमसुख की प्राप्ति कर सकते हैं । इतिहास गवाह है कि क्रान्ति के समय, आन्दोलन के समय क्रान्तिकारियों में, आन्दोलनकारियों में जोश और देशप्रेम जगाने के लिए वीररस की ओजपूर्ण कविताओं, गीतों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । इसी तरह प्रेम और प्यार की सशक्त, सटीक अभिव्यक्ति के लिए श्रृंगार पूर्ण गीतों का अपना महत्त्व सर्वोपरी है । बिना इसके श्रृंगार अधूरा, अकेला लगता है । मन के किसी भी भाव को जगाने में तथा उसकी सशक्त अभिव्यक्ति में गीत, ग़ज़ल और कविताओं का कोई सानी नहीं है ।

श्रीमती लता सिंघई का यह दूसरा काव्य-पुष्प गुच्छ प्रकाशित हो रहा है । 'झरोखे मन के' की पाण्डुलिपि आद्योपान्त पढ़कर मन प्रफुल्लित हो गया । बड़ी ही सधी हुई सशक्त और मनमोहक काव्यों का यह संग्रह है । इस संग्रह का शीर्षक भी बड़ा प्रतीकात्मक है । संग्रह की तमाम कविताओं का प्रतिनिधित्व करने में शीर्षक 'झरोखे मन के' पूर्णतः सक्षम है, समर्थ है ।

'पुरस्कार' कविता में गजब का आत्मविश्वास दृष्टिगोचर होता है । कर्मठ व्यक्ति को अनोखी सिद्धियाँ प्राप्त होती ही हैं कुछ पक्तियाँ देखिए -

आँधियों की डगर पर चलकर
हवाओं का रुख़ बदलती रहना
ढूँढ लाना कोई नया क्षितिज
जहाँ आसमाँ झुक जाएगा

तुम्हें स्वयं, प्रभु के अंश होने का
प्रमाण मिल जाएगा
तुम्हारे जीने को तो क्या
तुम्हारी मौत को भी
नया तराना मिल जाएगा

'भाग्य' जैसी ही रचनाएँ जीवन में कर्मठता को पूर्ण दृढ़ता से प्रस्थापित कर सकती हैं । बड़ी ही सशक्त पंक्तियाँ हैं ये –

संघर्षों से घिरे
घने काले बादलों-सा जीवन
श्रम-परिश्रम की उष्मा से
खुशियों की बरसात करता है ।

....आज के समय में हर कोई महान बनना चाहता है । हर कोई बड़ा बनना चाहता है । यह मानव स्वाभाविक गुण है, इससे कोई भी बच नहीं पाया है । लताजी भी इससे अछूती नहीं हैं । लेकिन आम आदमी के महान बनने और एक रचनाकार के महान बनने में बड़ा फर्क होता है । सफलता के शिखर पर हर कोई पहुँचना चाहता है, ऊँचाई सभी को पसन्द है, लेकिन ऊँचाई तभी सार्थक है जब वह यथार्थ के धरातल से जुड़ी हो । 'ऊँचाई' की ये पंक्तियाँ देखिए -

ऊँचे कद में ना देना/तुम कोई ऐसा बौनापन/आसमान को छूते-छूते/छूटे ना मेरा आँगन/हे प्रभु दे दो अगर ऊँचाई/तो संग लेना ऐसा मन/गैरों के संग चलते-चलते/अपनो के चलू मैं संग

उपर्युक्त पंक्तियों को पढ़कर मुझे यह प्रसिद्ध दोहा याद आ रहा है-

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं फल लागे अती दूर ।।

मन की अनुभूतियों को संवेदनाओं को बिम्ब और प्रतीक के माध्यम से सशक्त और सटीक ढंग से अभिव्यक्त करना उत्तम रचनाकार का पहला लक्षण माना जाता है और यह अन्दाज लताजी में पूर्ण रुप से दृष्टिगोचर होता हैं । 'नन्हीं-सी फाँस' की पंक्तियाँ देखिए -

जब जब भी फाँस पर/चुभन का एहसास होता/दिल और दिमाग पर/एक तीक्ष्ण प्रहार होता/खामोशी से उठता एक सवाल/जब प्यार दोनों का ही/पूर्णतः समर्पित है तो/क्यों छा जाती है खामोशी/क्यों चुभती है फाँस इस संग्रह की एक और सशक्त रचना है 'भोली भाली जनता'/ इस रचना में विश्व के सबसे बड़े लोकतन्त्र की प्रजा की बेबसी, मजबूरी और लाचारी का बड़ा ही सटीक शब्द चित्र प्रस्तुत किया है -

जनता के मत को लूट/नेता बनते हैं/जनता के मन को लूट/अभिनेता बनते हैं/जनता के धन को लूट/राजनेता बनते हैं/बेचारी लुटी जनता/नेता, अभिनेता, राजनेता की/मनमानी मार सहती है

इसी तरह इस संग्रह में भाई-बहन के स्नेह, माता-पुत्री के प्यार, बच्चों के लिए लोरी, नारी मन की विवशता, उसकी असीमित शक्ति, टूटती परम्पराएँ, सामाजिक विसंगतियाँ, ह्रास होती संस्कृति, वर्तमान कलुषित राजनीति पर कुठाराघात जैसी वैविध्य सभर, अनेक रंगों की रचनाओं से भरपूर यह संग्रह हिन्दी साहित्य जगत में अपना स्थान निश्चित रुप से बना पाएगा इसमें कोई सन्देह नहीं है ।

इस अनुपम और अ-द्वितीय काव्य-संग्रह के प्रकाशन पर्व पर आपको कोटिशः बधाई और शुभकामनाएँ । आप पर ईश्वर की कृपा बनी रहे, जिससे आपकी कलम अनवरत रुप से साहित्य की सेवा में निमग्न रहे, और आपके द्वारा हिन्दी साहित्य समृद्ध, सक्षम और सुदृढ़ होता रहे । श्रेष्ठ रचनाओं की सफल प्रस्तुति के लिए आपको खूब-खूब साधुवाद । धन्यवाद ।

9, माधव पार्क, **- विजय तिवारी**
स्वामिनारायण गुरुकुल के पीछे,
वस्त्राल रोड, वस्त्राल, अहमदाबाद-382418

अपनी बात...

कृति के कृत से

कविता मुझे विरासत में नहीं मिली । पढ़ने सुनने का शौक बचपन से ही रहा । छोटे से कस्बे आर्वी (महाराष्ट्र) में जन्मी, पली और बड़ी हुई । जहाँ रात-रात भर कवि-सम्मेलन चलते । जहाँ नीरज, चन्द्रसेन विराट, माया गोविन्द, प्रभा ठाकुर, शैल चतुर्वेदी, अशोक बाजपेयी जैसे कवियों ने अपना कविता पाठ किया है । इन कवि-सम्मेलनों को सुनना हमारे लिए विशेष दिन, विशेष अवसर होता, यूँ कहें तो इंतजार की रात होती । जिसे सुनने के बाद उन कविताओं को, उन पंक्तियों को गुनगुनाना हमारा शौक होता । यह सिलसिला ऐसा चला कि मेरे अपने बच्चों की लोरिया भी यही कविताएँ ही रही जैसे - माटी का पलंग मिला/राख का बिछौना/जिन्दगी मिली है जैसे/काँच का खिलौना... चीन छीन देश का गुलाब ले गया/ताशकन्द में वतन का लाल सो गया/हम सुलह की शक्ल ही सँवारते रहे/जीतने के बाद बाजी हारते रहे... लोरिया कहूँ या कविता, सुनते सुनते बच्चे सो जाया करते ।

लेखनी विचारों की अनुचरा होती है विचारों की सहचरी होती है । मन की अनुकूलता, अनुभूतियों ने हाथों में लेखनी उठा, महज अच्छे विचारों के आदान प्रदान हेतु किया गया प्रयास यानि छोटे-छोटे मुक्तक, तुकबन्दी ने काव्य का रूप ले काव्यसंग्रह रच डाला । मेरी पहली कृति, पहला काव्यसंग्रह 'सांझ ढले' महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत तो हुआ ही, साथ ही उसी काव्यसंग्रह की एक रचना 'इक्कीसवीं सदी हमारी होगी' का गुजरात माध्यमिक शाला के पाठ्यक्रम में समावेश, महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक व उच्चमाध्यमिक शिक्षण मंडल पूर्ण पाठ्यक्रम कक्षा 9वी 'सूत्रधार' कविता का समावेश जिसमें इस सदी के महाकवि डॉ. हरिवंशराय बच्चन एवं सुभद्राकुमारी चौहान की रचनाएँ

हैं। इस छोटी सी सफलता से मुझमें आत्मविश्वास जगा, स्वयं की पहचान और अपनी लेखनी की धार को महसूस करा गई। मौलिकता सी मिली सफलता इन्सान में नया आत्मविश्वास तो जगाती है साथ ही नई ऊर्जा नए आत्मविश्वास के साथ अच्छे कार्य करने के लिए प्रेरित करती हैं। उसी परिणाम स्वरुप आज मैं आपके सम्मुख अपनी दूसरी कृति 'झरोखे मन के' रख रही हूँ।

'इक्कीसवीं सदी हमारी होगी' के प्रेरणास्रोत रहे भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. कलामजी। उन्होंने अपने प्रारंभिक भाषण में खासतौर पर युवाओं और बच्चों के लिए विशेष सन्देश दिया था। ऊँचे - ऊँचे सपने देखिए और उन्हें साकार करने का प्रयास कीजिए। आज दुनिया में सबसे ज्यादा युवा आबादी हमारे पास है। विश्वपटल पर भारत की, ऊर्जा उछाल मार रही है। जरुरत है सही गति, सही दिशा और कल्पनाशीलता की, जरुरत है कि हम बच्चों में, युवाओ में **"हम ऐसा कर सकते हैं के भाव भर दें।"** अगर हमारा युवक सही दिशा में सही गति से अपने लक्ष्य की और बढ़ता है तो दुनिया में भारत को महाशक्ति बनने से कोई रोक नहीं सकता अगर उनके पास साहस है कुछ अलग सोचने का, असम्भव को सम्भव कर दिखाने का, समस्याओं से जूझ सफलता हासिल करने का। मैंने सोचा मेरे पास तो सिर्फ कलम है डॉ. कलाम जैसी सत्ता की ताकत नहीं। फिर भी बच्चों तक यह बात पहुँचाने के उद्देश्य से मैंने सूत्रधार और इक्कीसवीं सदी हमारी होगी कविताएँ लिखीं। सुखद अनुभव, सुखद संयोग रहा कि जिस उद्देश्य से मैंने यह रचना लिखी वह मेरा प्रयास सफल रहा। वह कविता स्कूली बच्चों के पाठ्यक्रम में शामिल कर ली गई। एक सुखद एहसास, कुछ कर गुजरने का, मुझे जीवन भर सुकून देता रहेगा।

सोच के सागर में डूबकर मोती ढूँढना शायद आसान होगा, पर रिश्तों के राजमहल में बैठा रानियों सा मन, समय के साथ, चाहत के रंगीन झरोंखों से झाँखता परखता, सोचता, विचारता, चपलमन ना जाने कितने इन्द्रधनुषी रंगों में खो जाता हैं। ये झरोखे होते हैं चाहत, प्यार, अपनापन, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, मान-अभिमान, अहंकार, निन्दा, प्रशंसा, विश्वास, अविश्वास जैसे भावों के, एहसासों के, दरियाई रिश्तों के।

तन का नियंत्रण और मन का नियंत्रण असम्भव तो नहीं तथापित वह एक उलझन अवश्य है। जिस तरह फिजाओं की, हवाओं की कोई सीमा नहीं होती, नदियों की कलकल धारा अपनी ही मस्ती में बहती है, पंछी खुले आसमान में निर्बाध उड़ते हैं। उसी तरह कविता की कोई भाषा नहीं, कोई सीमा नहीं, वह तो मन के उन्मुक्त विचारों से गगन तक को छू लेती है। वह तो भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। चाहे फिर वह सुबह की कुनकुनी धूप से मन को ऊर्जा प्रदान करने वाले एहसास हों, या दोपहर की प्रखर धूप से मन को ताप संताप देते भाव या फिर गोधूलि की शाम सी शीतलता दे, मानो कहते हों शाम के बाद घोर अन्धेरा भले ही छा जाए पर कल की भोर अपने उजास के साथ नई उमंग, नया उत्साह, नयी दिशा, नए विचार ला नई राह दिखाएगी।

आकाश का सूरज भी सुबह कुछ, दोपहर कुछ और शाम कुछ होता है। उसकी भी तीन गति होती है। सारी दुनिया को रोशनी देनेवाला सूरज भी राहु द्वारा ग्रसा जाता है। तो हम इन्सानों की क्या बिसात। सृष्टि के छोटे-छोटे तथ्यों में जीवन का सार छिपा होता है। नियति हमें जीवन जीना सिखाती है। कहते है अफवाहों के पैर नहीं होते, कोई निशान नहीं होते, वे तो हवाओं पर सवार होकर फैलती है। जो लोग किसी को ऊपर उठता नहीं देख सकते, सफल होते नहीं देख सकते वही आलोचना करते हैं, जबकि उसे भी मालूम होता है सफलता की राह पथरीली कांटों से भरी होती है। जिसकी चुभन हमें समय-समय पर होती रहती है। जीवन में विरोधी और निन्दक की महत्वपूर्ण भूमिका है। कंस ना होता तो कृष्ण कैसे जाने जाते, रावण न होता तो राम को कौन जानता, कैकेयी ना होती, राम भगवान बन पूज्यनीय कैसे होते, धोबी अफवाह न उड़ाता तो सीता की पवित्रता जग में उदाहरण ना बनती। सच, नायक की महिमा खलनायक से ही होती है नियति ने मुझे यही सिखाया कबीर कहते हैं -

निंदक नियरे राखिये, आंगन कुटी छवाय
बिन साबून पानी बिना, निर्मल करे सुभाय

स्त्री के हाथों दी है विधाता ने सृजन की डोर, सृजन भी कैसा-कभी दीपक

जला दिवाली मनाई, कभी रंगों से होली, कभी रेशमी धागों की डोर बाँधकर रक्षाबन्धन, कभी तिलक लगा भेज दिया रंगभूमि पर सरहदों पर। स्त्री को रचकर ही लगता है विधाता ने सृष्टि को रचा, रंगों को रचा । तभी तो हाथों में मेंहदी रचाकर, गालों पर गुलाल लगाकर, माथे पे बिंदिया सजाकर, आलते से पैरों का सौन्दर्य बढ़ाकर रंगों का महत्त्व बढ़ा दिया। पत्थरों, रत्नों, मोतियों के गहने बना उनका मोल बढ़ा दिया । बंदनवार बना द्वार पर लगा फूल पत्तों को शुभमय बना तुलसी बरगद पीपल को पूजनीय बना डाला। जिन्दगी की महक का नाम है स्त्री । जिन्दगी को सुखद बना रिश्तों में बाँध देती है स्त्री । रिश्ते जो बड़े नाजुक होते हैं, विश्वास पर टिके होते हैं । काँच की तहर अधिक ताप से चटक जाते हैं । विश्वास टूटते ही सब कुछ बिखर जाता है । यह विश्वास ही तो है जो नारी अपना सबकुछ छोड़कर अनजान परिवार, अनजान इन्सान का साथ जीवनभर निभाती है । शादी जैसा पवित्र रिश्ता नारी के विश्वास पर ही टिका है। इन्हीं भावों को, एहसासों को व्यक्त करती मेरी ये रचनाएँ हैं, नारी मन, नारी, हे नारी । रक्षाबन्धन....

लेखन काल में लेखक लौट जाते हैं अतीत में समय के पाँव बड़े अजीब हैं कभी उलटे तो कभी सीधे । जीवन में कभी धूप तो कभी छांव, सुखदुख दोनों रहते हैं, पर एक जैसी स्थिति कभी नहीं रहती । नियति के रचे सूत्र से कौन बच पाया । महत्त्वपूर्ण यह नहीं कि हमने कितना लम्बा, कितना ऊँचा जीवन जिया महत्त्वपूर्ण यह है कि हम जीवन को कितनी गहराई से विस्तारित मन से जीते हैं। जीवन को ऊँचा उठाते उठाते मन का विस्तारित होना आवश्यक है । मन तो आकाश से भी बड़ा होता है । मन माया की खान है मन से बड़ा कोई जगत नहीं । एक बार चूजे ने अपनी माँ से पूछा ।

माँ आकाश कितना बड़ा है
बच्चे को अपने पंखों में समेटा और
चिड़िया ने कहा
आराम से सो जाओ
इन पंखों से बहुत छोटा है

माता से बढ़कर निःस्वार्थ करुणा वात्सल्यमय रिश्ता कोई दूसरा हो नहीं सकता। बालक, दिन में ना जाने कितने अपराध करता है किन्तु माँ के हृदय में उनमें से एक भी नहीं रहता। मेरी यह कृति मैं अपनी ममतामयी माँ को समर्पित करती हूँ, जिसने मुझे दिल की धड़कने दीं, संवेदनाएँ दीं। सरल, कर्तव्यपरायण, स्नेही, सदा चुपचुपसी रह परिवार को सहेजने का प्रयास करती कर्तव्यों और जिम्मेदारी के एहसासों में शायद अपने बच्चों से प्रेम जताना भूल गई। उस माँ के मन को सुकून देना चाहती हूँ। क्योंकि माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं। अपनी पोती गीत के लिए लिखी लोरी गुड़िया रानी, मेरी लाडी, जिसे सुनकर वह सो जाती थी, जिसमें मैंने अपने बच्चों का बचपन महसूस किया, मेरे जीवन के वे अद्भूत क्षण उसे भी मैं अपनी यह कृति समर्पित करती हूँ।

सृष्टि के शाश्वत सत्य और मानवीय संवेदनाएँ शब्दों के पौध से लहलहाते मेरे गीत मेरा उपवन, जीवन को सुगन्धित करने की भावना रखते मेरी कृति, मन के गलियारों से गुजरती, रिश्तों के महल में झरोखों से झाँकते मन की कृति 'झरोखे मन के'

जीवन कर्म है वर्षो का जोड़ नहीं
कर्म या सुविचार है, साँसों के आकड़े नहीं।
भावनात्मक कृत्य है, घड़ी के आकड़े नहीं।
किसी के प्रति धड़की, दिल की धड़कन का योग है जीवन

पुस्तक सृजन में जिनका अपूर्व और अनुकरणीय सहयोग रहा उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना में अपना दायित्व समझती हूँ। परम श्रद्धेय आचार्य 108 श्री पुष्पदन्तसागरजी का आशीर्वाद मुझे हमेशा मिलता रहा। दूजे लोक में बैठे पिता का आशीर्वाद इस लोक में मैंने हमेशा उनके आशीर्वाद में महसूस किया। विश्वसंत मुनिश्री 108 पुलकसागरजी का शुभ आशीर्वाद पाकर मैं कृतार्थ हो गई।

जिन्होंने मेरी रचनाओं को पढ़ा सराहा और हौसला अफजाई की वो हैं गुड़गाँव की डॉ. नीलम जी जैन। यह मेरे लिए सुखद अनुभूति है कि मुझे नीलम जी जैसी

सिद्धहस्त विदूषी का मार्गदर्शन एवं सहयोग एक सखी के रुप में मिला। जैन धर्म की पताका अस्सी से अधिक देशों मे फहराने वाली जैन समाज में सर्वाधिक सम्मानों से सम्मानित महिला, लेखिका, पूलक वाणी, दिव्य देशना, महिलादर्श मासिक पत्रिका, की सम्पादिका जिन्होंने अपने अति व्यस्तम समय में से समय निकाल मेरे काव्यसंग्रह 'झरोखे मन के' की प्रस्तावना लिख मेरे काव्यसंग्रह को गरिमा प्रदान की है उस हेतु में आपकी चिरऋणी रहूँगी। विश्वास है आपका सहयोग एवं मार्गदर्शन मुझे सदैव प्राप्त होता रहेगा।

मेरा सौभाग्य है कि मेरी साहित्यिक यात्रा में मुझे जिन्होंने सर्वप्रथम साहित्य क्षेत्र से जुड़ने का मौका दिया जिन्होंने मार्गदर्शन एवम् सहयोग दे अपने विशालहृदय का परिचय दिया। जिनके अपरिमित सौहार्द एवं हौसला अफजाई से मेरे सर्जक मन को निरन्तर संबल मिलता रहा, वे हैं ध्रुव प्रकाशन, अहमदाबाद, गुजरात, के सम्पादक श्री विजय जी तिवारी, जिन्होंने व्यस्ततम समय में से कुछ बहुमूल्य समय निकालकर मेरी कविताओं का मनोयोग से अध्ययन कर इन पर अपनी बेबाक मन्तव्य देकर मनोबल बढ़ाया। मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ। अखिल भारतीय पुलक जन चेतना मंच के भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्री रमेशचन्द्र जी मनया, (भोपाल) सदा मुस्कुराते सभी को अपनाते सरल हृदयी जिन्होंने अपने अति व्यस्ततम समय में से समय निकाल कर मेरे काव्यसंग्रह को मनोयोग से सम्पादित कर उसे गरिमा प्रदान की है, मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ।

मैं आभारी हूँ पुस्तक के प्रकाशक अक्षर संयोजक, मुखपृष्ठ के कल्पक श्रीमान अंकित जैन 'प्रिन्स' की जिन्होंने सुन्दर संयोजन प्रकाशन कर मुझे सहयोग दिया। 'जी आन्टी' कहता अंकित सदा मन में अंकित रहेगा।

जिन्दगी यूँ तो समानताओं, असमानताओं की खान है। हम पति-पत्नी विचारों के धरातल पर भले ही अलग-अलग हों, जिन्दगी जीने के नजरिये भले ही अलग-अलग हैं पर जीने के सूत्र हमेशा एक जैसे रहे। उलझते मन के धागों को सुलझाने के लिए धागे का एक सिरा ढूँढ़ना आवश्यक होता है, हमारे बीच वो सिरा रहा एक-दूसरे का सम्मान, एक-दूसरे पर विश्वास, एक-दूसरे की स्वतन्त्र

विचारधारा के साथ जीना। इसी धागे की डोर ने हमारे रिश्ते को अटूट बन्धन में बाँध रखा। मेरे पति सुरेन्द्रकुमार जी सदा मुझे सहयोग, मार्गदर्शन, प्रोत्साहन देते रहे। मेरी पहचान मेरा परिवार। पति सुरेन्द्रकुमार जी, पुत्र एवं पुत्रवधूएँ समित-अलका, आकाश-पल्लवी इन्होंने परिवार की जिम्मेदारी सँभालने से मुझे मेरे अपने पलों में जीने का मौका मिला, समय निकाल सृजन कार्य कर पाई। उनका सकारात्मक सहयोग मुझमें हर पल नया उत्साह, नई-नई कल्पनाओं को जन्म देता रहा। इस पुस्तक को आप सुधि पाठकों के सम्मुख रखने में सबसे बड़ा योगदान मेरे परिवार का है।

सपनों की दुनिया नहीं है ये
ख्वाबों को हकीकत में उतारा है
प्रभु से मिले हुनर को
कलम से गीतों में ढ़ाला है।

अब यह संग्रह आप तमाम पाठकों, प्रबुद्ध समीक्षकों के सम्मुख सादर कर रही हूँ। इस पर आपकी बेबाक टिप्पणियाँ आपके विचार और सुझावों कि मुझे बड़ी बेसब्री से प्रतिक्षा रहेगी। मुझे विश्वास है आपके सुझावों और मार्गदर्शन से में अवश्य लाभान्वित एवं कृतार्थ होगी।

- लता सिंघई

वसंत पंचमी, 2013

पता –
कस्तुरी 12, गणेश विहार,
वडनेरा रोड, अमरावती,
महाराष्ट्र-भारत
Email : latassinghai@gmail.com

अनुक्रम

सम्पादकीय	...	...	...	05
प्रस्तावना	...	...	...	11
प्रस्तवन	...	...	...	15
अपनी बात	...	...	...	18
कृति के कृत से	...	...	...	18

अनुभूति के स्वर

मेरे गीत	...	...	...	28
महामहिम-फिर मुस्कुराई	...	...	...	29
समय	...	...	...	30
चाहत के शिखर	...	...	...	31
पुरस्कार	...	...	...	32
कर्मवीर युवा ही है	...	...	...	33
दरयाई मन की पहचान	...	...	...	34
क्रोध की क्षमता	...	...	...	36
जैसी मति वैसी गति	...	...	...	38
भाग्य	...	...	...	39
एक बरस पार हो गया	...	...	...	40
क्षण क्षण बीत चला	...	...	...	41
ये तस्वीरें	...	...	...	42
मेरा मन	...	...	...	43
कर्म	...	...	...	45
पतित से पावन	...	...	...	47
भटके मुसाफिर के नाम	...	...	...	49
ऊँचे कद	...	...	...	51
यह दुनिया	...	...	...	53
मेरी बगिया	...	...	...	54

अनुराग के स्वर

माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं	...	...	...	57
कहाँ खो गयी वो संवेदना	...	...	...	59

रक्षाबंधन	...	...	...	61
सपनीली होली	...	...	...	62
नन्हीं सी फाँस	...	...	...	64
आकृति	...	...	...	66
ये मोती	...	...	...	67
रिश्ते	...	...	...	68
संवेदनाओं का सत्य	...	...	...	69
नारी मन	...	...	...	70
नन्हें लम्हें	...	...	...	71
सखे तुम	...	...	...	73
मानस प्रियतम	...	...	...	74
अजनबी हमसफर	...	...	...	75
प्यारे-प्यारे दिन	...	...	...	76
दिल ये चाहे	...	...	...	77
दिल	...	...	...	78
हे नारी	...	...	...	79
भारतीय नारी	...	...	...	81
नारी	...	...	...	82
बहिर्मुखी-अन्तर्मुखी-बन्दमुखी नारी	...	...	...	83
नारी संगठना (व्यंग्य)	...	...	...	84
भोली भाली जनता (व्यंग्य)	...	...	...	85
गुड़िया रानी	...	...	...	86
मेरी लाडो	...	...	...	88
बिदाई	...	...	...	90
यौवन की सीख	...	...	...	92
बहूरानी	...	...	...	94
पल दो पल की जिंदगी	...	...	...	95
मैं	...	...	...	96
सरिता तट की माटी	...	...	...	98
मुक्तक	...	...	...	100

अनुभूति के स्वर

मेरे गीत

कौन जाने किस डगर पर
धड़कनें रुक जायेगी
जिन्दगी का क्या भरोसा
एक दिन लुट जायेगी
मानवता से भरी जिन्दगी
संग हमारे जायेगी
प्यार अपनेपन की बातें
दिल में ये रह जायेगी
हो सके तो माफ करना
मेरी छोटी छोटी भूलों को
याद बस इतना ही रखना
तुम मेरे इस गीत को।

*

महामहिम-फिर मुस्कुराई

सूरज अभी ढ़ला नहीं
चाँद बेताब है गगन पर छाने के लिए
सूरज ने कहा
चाँद इतनी बेताबी क्यों ?
चाँद ने कहा
अभी अभी राष्ट्रपति भवन में
अंबानगरी की माटी की महक आयी है,
प्रतिभा की प्रतिभा दुनिया पर छायी है
पति देवसिंह ने,
महिला दिवस की पूर्व संध्या पर
कुछ अपनों की सौगात लायी हैं
कहा
जिस हँसीं चेहरे के लिए
बनाया था यह जहान
कर्तव्यों और उड़ानों के बीच
कहीं छिप गयी उस चेहरे की मुस्कान
कुछ पल ठहर जाओ
महिला दिवस की पूर्व संध्या पर
एक सौगात मुझे दे जाओ
सुन महामहिम-धीरे से मुस्काई
नारी सुलभ मुस्कान हँसी चेहरे पर आयी
तस्वीर सी ताई फिर मुस्कुराई
तस्वीर सी ताई फिर मुस्कुराई ।

समय

मैं समय हूँ, चलायमान गतिमान
हर पल चलना मेरी पहचान
चलते चलते घटती है घटनाएँ
जो इतिहास बन जाती हैं
देती हैं खुशियाँ
जो जीने का सहारा बन जाती हैं
मुझमें समाहित है जीवन के रंग
क्योंकि जीवन चलता है मेरे संग
प्यार, अपनापन, चाहत लाती हैं नजदीकियाँ
जिससे घटती है परिवार समाज की दूरियाँ
जिन्दगी गीत है गुनगुनाना सिखिये
जिन्दगी नृत्य है नाचकर अभिव्यक्त करना सीखिये
नफरत लड़ाई से कुछ नहीं होता हासिल
प्रेम और प्यार से जिन्दगी बिताना सीखिये
मैं समय हूँ, चलायमान, गतिमान।

*

चाहत के शिखर

चाहत के शिखर को छूने
चल पड़ी हूँ जिन पगडंडियों पर
उन पगडंडियों पर
कहीं रेतीले कंकड की चुभन है
कहीं मृदुमाटी की छुवन है
कहीं वनवासी पौधों की गंध है
कहीं महकते फूलों की सुगंध है
कहीं निराशा का घोर अँधेरा है
कही उमंगो का उजाला है

फिर भी.......

कुछ कर गुजरने की तमन्ना है
कुछ जीने का नया तराना है
कुछ कदम ईश्वरीय हाथ है
कुछ कदम अपनों का साथ है
उम्मीद का दिया टिमटिमाता है
लम्हा लम्हा मुझे बुलाता है

कहता है.......

तलहटी पर अँधेरा है तो क्या हुआ
शिखर तो भोर का आदी है
दो कदम चली हो तुम
सफर अभी बाकी है
सफलता की कुछ चोटियों को छुआ है तुमने
शिखर को छूना अभी बाकी है ।

पुरस्कार

प्रेरणा देते पुरस्कार
सत्कर्मों की राह दिखाते सम्मान
देते है जीने का बहाना
और कर्मों की नई परिभाषा
श्री चरणों में अर्पित किये जाने वाला श्रीफल
रखा जाता है जब मेरे करकमलों पर
तब मिलती हैं मेरे जीवन को नई दिशा
वह हर पल मुझसे कहता है
संचित पुण्यकर्मों से आज
ओढी है प्रभुकृपा से शॉल तुमने
प्रभु ने तुम्हें
पथ दिया, पाथेय भी दिया,
पथिक बन चलती रहना
आँधियों की डगर पर चलकर
हवाओं का रुख बदलती रहना
ढूँढ लाना, कोई नया क्षितिज,
जहाँ आसमां झुक जायेगा
तुम्हें स्वयं, प्रभु के अंश होने का
प्रमाण मिल जायेगा
तुम्हारे जीने को तो क्या
तुम्हारी मौत का भी
नया तराना मिल जायेगा।

कर्मवीर युवा ही है

भूतकाल –

कभी वेदनाओं से भर
कभी पीड़ाओं को हर
यादों से घिरा, किसी समय का
वर्तमान ही तो रहा होगा
भविष्य,
जिसकी सदा हमें
चाह, तलाश रहती है
वह जब भी सामने आता है
वर्तमान बनकर ही आता है

वर्तमान –

बच्चों का कोई अतीत नहीं होता
बूढ़ों का कोई भविष्य नहीं होता
अतीत में झाँक, भविष्य के सपने देखे
ऐसा वर्तमान हर किसी का होता है

ऐसा वर्तमान –

जिसका उज्जवल भविष्य
सबकीय अतीत, सम्मानित वर्तमान है
वह कर्णधार, कर्मवीर
युवा ही है, युवा ही है।

दरियाई मन की पहचान

तलहटी से सम्मोहित करते
आरोहण का आमंत्रण देते
ऊँचाईयों को छूने की ललक जगाते
शून्य में जकड़े जकड़े
अपनों से अकड़े अकड़े
भले से लगते हैं,
ऊँचे ऊँचे पर्वत।

ऐसी ऊँचाई जहाँ
बसंत ना पतझड
नीड ना बसेरा
फूल ना काँटे
बस चुभती बर्फ सी
एक ठंडी सी खामोशी।

दरिया की गहराई, एक विस्तार
अपने आप में विशाल
सबको समेटे
सबको समाहित करता
एक संपूर्ण जीवन
प्राणियों का बसेरा भी
सीप भी, मोती भी।

गहराई से होता विस्तार
संग संग रहने का एहसास
सुख दुख का आभास
मन का उल्लास
जीवन का प्रकाश
एक विश्वास।

किन्तु जहाँ
ऊँचाई और गहराई दोनों होती है
वह सृष्टि की सुंदरतम रचना होती है,
रमणीय, वंदनीय, मन मोहनीय
किसी को साथ ले
किसी के संग चलते
दरियाई मन की पहचान होती है।

*

क्रोध की क्षमता

क्रोध की क्षमता है कितनी
क्षमा के सामने कब तक टिकेगी वह?

क्रोध आँधी तूफान-सा आएगा
सब कुछ बहा ले जाएगा
पश्चाताप के सिवाय
हमें कुछ ना दे पाएगा
क्षमा की सुगंध
तन-मन में बस जाएगी
स्वयं को सुगंधित कर
दूसरों को भी मँहकाएगी

क्रोध की क्षमता है कितनी
क्षमा के सामने कब तक टिकेगी वह ?

फूँक मारा दर्पण भी
प्रतिबिंब नहीं दिखलाता
फुंकार भरा मन भी
स्वयं से नहीं मिलवाता
क्रोध का बाहुबल दुश्मन को
पराजित करता प्रतिशोध में
जीत नहीं पाता किसी मन को
क्षमा जीतती समर्पण में

क्रोध की क्षमता है कितनी
क्षमा के सामने कब तक टिकेगी वह ?

अहंकार से डूबा क्रोध
सदा नीचे ही बहता है
क्षमा क्षमाधारी को ऊँचा उठा
हृदय परिवर्तित करती है
अहंकारी को तन से झुका
मन से ऊंचा उठाती है
क्रोध निम्नगामी है
क्षमा ऊर्ध्वगामी है

क्रोध की क्षमता है कितनी
क्षमा के सामने कब तक टिकेगी वह ?

अहंकार की तलवार से
सम्राट तो बन जाओगे
तन-धन पर होगी सत्ता
मन को ना जीत पाओगे
तलवार की जीत से
तो प्यार की हार अच्छी है
जीत पाओ अगर मन को
तो प्यार की हार भी सच्ची है

क्रोध की क्षमता है कितनी
क्षमा के सामने कब तक टिकेगी वह ?

जैसी मति वैसी गति

मेघ बन बरसती
जल की धारा
नदियों में गिरे तो
नीर बन जाती है
नयनों से बरसे तो
आँसू कहलाती है
सागर में गिरे तो
लवणाकार हो जाती है
वही स्वाति काल में
सागर की सीप में गिरे तो
मोती बन जाती है
हिम पर्वत पर गिरे तो
स्वयं हिम बन जाती है। ।।1।।

जल जीवन देता है
हिम जीवन लेता है
स्वभाव और विभाव में
यही अन्तर है
नीर प्यास बुझाती है
हिम प्यास बढ़ाती है
हिम से बाहरी शीतलता है
नीर में आन्तरिक निर्मलता है
इसलिए कहते हैं
जैसी संगति वैसी मति
जैसी मति वैसी गति। ।।2।।

भाग्य

संघर्षों से घिरे
घने काले बादलों सा जीवन
श्रम परिश्रम की उष्मा से
खुशियों की बरसात करता है।

भूमि तमी उपजाऊ होती है
जब श्रमिक परिश्रम से खोद जमीन बीज बोता है
फसल तभी लहलहाती है खेतों में
जब बादल नीर बन बरसता है।

कोई किस्मत का रोना रो
हाथ पर हाथ धरे बैठता है
कोई अपनी मेहनत से
स्वयं अपना भाग्य बदलता है।

*

एक बरस पार हो गया

एक बरस पार हो गया
मृत्यु के पास हो गया

धरती अंबर ना जीते मरते
केवल काया जीती मरती
साँसो को कब तक चलना है
अंतिम साँसे कब आनी है
नहीं जानती एक बरस पार हो गया
मृत्यु के पास हो गया

बचपन की वो यादें प्यारी
बाबुल की वो गलियाँ न्यारी
यौवन रसभरा है बीता
शेष रह गया रीता रीता
फिर भी, एक बरस बीत गया
मृत्यु के पास हो गया

बदला मौसम, बदला जीवन
मिटती काया, लुटती माया
जीवन बीता, ले रीता मन
जीवन हाथ से फिसल गया
सच, एक बरस पार हो गया
मृत्यु के पास हो गया।

क्षण क्षण बीत चला

कल कल की उलझन में
आज हाथ से निकल गया
भूत भविष्य की चिन्ता में
वर्तमान भी फिसल गया।

खोने पाने के चक्कर में
जीवन एक व्यापार हो गया
मोल लगा अपना ही हाट में
लूटा-पीटा सा खड़ा रह गया
क्षणभंगूर जीवन का
क्षण क्षण बीत चला।

कोई जतन काम ना आया
कोई शाश्वत साथ ना पाया
छोड़ हाट में मुझे अकेला
एक एक कर मीत चला
क्षणभंगुर जीवन का
क्षण क्षण बीत चला।

विदाई की बेला में
रीता मन, सूनी आंखो में
परलोक के इन्तजार में
मौत से भी प्यार हो गया
क्षणभंगुर जीवन का
क्षण क्षण बीत चला।

ये तस्वीरें

उम्मीद की डोर से बँधी
आसमान को छूने का प्रयास करती
उलझे लम्हों की सुलझी ये तस्वीरें
ख्वाबों को हकीकत में बदलती ये तस्वीरें
हुनर की खुशबू बिखेरती ये तस्वीरें
सम्मानों से सजी ये तस्वीरें
सिर्फ तस्वीरें नहीं हैं ये
अपने अस्तित्व को बनाती
स्वयंसिद्धा नारी की पहचान हैं ये तस्वीरें
सर उठा कर जीए
मेरे अपने पलों को बँया करती
मेरी जुबाँ हैं ये तसवीरें।

*

मेरा मन

आज
अंतिम प्रवास में
शून्य की यात्रा पर
कर्मो के मकड़जाल में
उलझा मेरा मन
अंतरात्मा के संग
विचारों से मुक्त
भावों से रिक्त
कर्महीन होना चाहता है
मेरा मन
भीड़ में अकेला
अकेला, फिर भी भीड़ से घिरा
अपने ही आत्मालोचन में
जीवन की डोर की
अंतिम छोर को पकड़ता
मन की परते खोलता
अपने पराये दर्द को तौलता
दूसरों की दृष्टि से देखता।

मेरा मन,

मन के गलियारों से गुजरता

सत्य से हारता

वर्तमान को निहारता

निरागस, निरामय, कर्महीन

शून्य में खड़ा

अंतरात्मा के संग

रहना चाहता है

आज, मेरा मन।

*

कर्म

यश अपयश का मिलना
एक ही सत्य के दो आयाम हैं
कर्मो की फलश्रुति है
पाप पुण्य का मायाजाल है
सोच-समझ का फेर है
कर्मबन्ध को भोगना ही है।

राहू केतू शनि की वक्रद्रष्टि में
नक्षत्रों को पथभ्रष्ट होना ही है
बुध गुरु की कृपा दृष्टि से
जीवन को ऊपर उठना ही है
ना कोई ग्रहों की चाल समझ पायेगा
ना ही अपने प्रश्नों के उत्तर ढूंढ पायेगा।

हर शख्स असमंजस में है
उत्तर की खोज में है
प्रश्न सदा अनुत्तरित हैं
सभी को इस प्रश्न ने ठगा है
जब तक मानव जीवन रहेगा
शायद यह प्रश्न, प्रश्न ही रहेगा।

कर्मो की गति, धर्म का ध्यान
भ्रमों के तालों को, विवेक से खोलेगा ।
एक दिन अवश्य ही, यथार्थ द्वार खोलेगा
सृष्टि के रचयिता से
प्रश्न पूछने के बजाय
कर्म स्वयं उत्तर बोलेगा ।

*

पतित से पावन

हे मूक प्राणी !
जब जब भी, मौका मिला
तुमने अपनी, स्वामी भक्ति का
परिचय दिया
सोचती हूँ अक्सर
ना जाने किस कर्मबंध वश
तुम इस पर्याय में आये
हे जीव, तुम जैसा
शान्त समताधारी प्राणी
मैंने इस जीवन में नहीं देखा
आजीवन तुम हम मनुष्यों से बेहतर रहे
स्वामीभक्त, अहिंसक, संयमी,
जीवन रसों से दूर
जो आज कलयुगी
मानव में पाना दुर्लभ है
हे जीव ! चाहती हूँ
मुक्त हो जाओ, दासता से
तोड़ बंधन चले जाओ
जहाँ कोई बंधन ना हो
जंजीरों की यातना ना हो
मूकता ही व्यथा न हो
क्योंकि, पतित से पावन

मार्ग पर चलना, बढ़ना
जीव का लक्ष्य है

हे प्रभु !
सुन लीजिये मेरी प्रार्थना
इस जीव में जगाओ
ऐसे सम्यक्भाव
कर्मों की हो निर्जरा
पापों का हो नाश
ताकि यह जीव
जीवन के बाहुपाश से
बंधन से मुक्त हो जाए
इस पृथ्वी पर फिर
लौट के ना आये

या
हे प्रभु !
सुन लीजिये मेरी प्रार्थना
इस जीव में जगाओ
ऐसे भाव, दो ऐसे कर्म की
ऐसी पर्यायों से, मुक्त हो जाये,
पतित से पावन राह पर
अपने कदम बढ़ाये
अपने कदम बढ़ाये।

भटके मुसाफिर के नाम

हे मुसाफिर, तुम्हें
उत्सवी जीवन में
एक आवाज आयी
जानी पहचानी, किन्तु-अनजानी
आवाज थी मौत की
स्वर था प्रिय के वियोग का
रुदन था, मोह के बंधन का
कैसा मोह, कैसा रुदन
परछाईं सा न रहता
हर दम कोई अपने साथ
दिल में ही रहता
अपना अपने पास
रो रो शांति की कामना कर
क्या संसार में भटकाओगे
जीवन भर जिसने हँसाया
क्या आँसुओं में उसे डुबाओगे
हे मुसाफिर उठ
इन पथरीली राहों में
राह अपनी ढूँढ़नी होगी
जीवन के हर पग की

चुनौती तुम्हें समझनी होगी
राहें तो हैं जानी पहचानी
तू ना कर इतनी नादानी
चलता चल तब जान पायेगा
तू भटक रहा था मोहजाल में
वही साथी राह दिखायेगा
तुझे अपने प्यार में
जान जीवन का सत्य
बादल पानी बरसाना भूल जाये
सूरज को ग्रहण लग जाये, पर
मृत्यु बिन जीवन से मुक्ति नहीं
इस सत्यबिन, जीवन की तस्वीर नहीं ।

*

ऊँचे कद

ऊँची ऊँची महल अटारी
ऊँचे पद और ऊँचे नाम
ऊँचाई पर होता है बस
एकाकीपन और अभिमान
हिमगिरी पर होती ऊँचाई
और ठंडेपन का एहसास
पाव तले ना दूब उगती
ना जीवन का कोई प्रमाण। ।।1।।
जल जीवन देता है लेकिन
ऊँचाई पर जम जाता
जीवन और सूनेपन का
देखो ये कैसा नाता
हिमगिरी पर गिरी बूँद भी
अपनी किस्मत पर रोती है
इठलाती नदिया में मिलती
कलकल करती बहती मैं। ।।2।।

ऊँचे ऊँचे सघन पेड़ जब
फैलाते अपनी बाहें
पांव तले तब दूब उगती
नन्हीं कलियाँ मुस्काये
कलरव करते पँछी मिलते
थका पथिक भी ले विश्राम
पवन सुगंधित कर देती है
उस पल जीवन के आयाम। ।।3।।

ऊँचाई संग विस्तारित मन
जीवन को सुगन्धित करता है
जैसे पारस को छूने से
लोहा सोना बनता है
शिखरों के वन्दन करने से
मिलता ना हमें कोई भगवान
दुखियों के आँसू पोछें तो
बन जाते स्वयं भगवान। ।।4।।

हे प्रभु,
ऊँचे कद में ना देना
तुम कोई ऐसा बौनापन
आसमान को छूते छूते
छूटे ना मेरा आँगन
हे प्रभु दे दो अगर ऊँचाई
तो संग देना ऐसा मन
गैरो के संग चलते चलते
अपनों को ले चलू में संग। ।।5।।

*

यह दुनिया

नीला नीला गगन बनाया
चाँद सितारों से सजाया
यह दुनिया किसने सँवारी ?
किसकी है यह चित्रकारी ?

गोल गोल दुनिया में
ना जाने कितने सागर हैं
सागर के किनारों पर
कितने देश बसाये हैं

हर नदिया का पानी मीठा
सब की प्यास बुझाता है
टेड़े मेड़े रास्ते चलकर
सागर में जा मिलता है।

दुनिया के सारे पेड़ पौधे
भेदभाव कभी ना करते
धरती के सारे जंगल
जीवन को खुशहाली देते।

चाँद सितारे नदिया जंगल
सबको देखे एक समान
जाती पाती, प्रांत-देश में बँटकर
हम बन जाते क्यों हैवान ?

मिलजुलकर खुशियाँ बाँटों
नफरत के बीज ना बोओ
जीवन को खुशहाल बनाओ
दुनिया को अलगाववाद से बचाओ।

मेरी बगिया

सुबह सुबह सुरज की लाली
ओस की बूँद भी लगती प्यारी
रंगबिरंगी फूलों की क्यारी
मेरी बगिया सबसे निराली

फुदक फुदक कर पंछी जब आते
चकह चहक कर शोर मचाते
अमुआ की डाली पर कोयल आती
मीठे मीठे गीत सुनाती

भिन्न जाति के, भिन्न वर्ण के
पौधो से सजी है बगिया
हर पौधे का अपना नाम
हर पौधे की अपनी पहचान

कोई बड़ा ना छोटा
मिलजुलकर, हर पौधा रहता
जैसे पौधों ने सजाई बगिया
संग रहकर बनाये हम दुनिया

मुस्काना फूलों से सीखें
संग संग हम रहना सीखें
जीवन को त्यौहार हम समझें
प्रभु का उपहार हम समझें।

अनुराग के स्वर

दिल की चाहत ने
ना जाने क्या क्या सपने देखे
डर लगता है, ख्वाबों की तस्वीर
हकीकत में बेरंग ना हो जाए ।

*

माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं

दिल की पहली धड़कन
ममता का पहला स्पर्श
काजल का पहला टीका
आँचल का अमृत भोग
पहला कदम, पहली सीख
सभी कुछ पहली बार
जीवन में पाया है तुमसे
किसकी दू तुम्हें उपमा
तुम में तो समाये है स्वयं ब्रह्मा
माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं।

तुम्हारी सरलता, तुम्हारी कर्तव्यपरायणता
तुम्हारा मौन रह, सबको सहेज रखने का प्रयास
ना कोई ख्वाहिश, ना कोई फरमाईश
ना कोई गिला, ना कोई शिकायत
सदा अपनी पीड़ा को दबाये रखने का प्रयास
जिसके काँटे मुझे अब तक चुभते हैं
सुख-दुख की अनुभूतियों को
ख्वाहिशों को दबाकर, कैसे सहेज पाई तुम
बस यही सीखना चाहती हूँ, क्योंकि
माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं।

बचपन में तुम्हारा पल्लू पकड
पीछे-पीछे चलती थी
यौवन की दोपहरी की दहलीज पर
लुकाछीपी के खेल में
अपनी ही परछाई पकड़ने का
प्रयास करती थी
जीवन की सांध्य बेला में
तुम्हारे आगे चल
तुम्हारी राह के काँटे चुन
तुम्हें सुकून देना चाहती हूँ
माँ तुम्हारी परछाई हूँ मैं ।

*

कहाँ खो गयी वो संवेदना

वह बचपन की मिली उपाधि 'महारानी विक्टोरिया'
आज मुझे सत्य जान पड़ती है
पर देनेवाला वह स्नेही पथिक
पथ भूला सा लगता है

भाई बहनों की बेतुकी लड़ाई में
तुम न्याय किया करते थे
आदर्शों को अग्रिम पंक्ति में
तुम अक्सर दिखा करते थे

बाबुल के कुर्तों से, खनखन पैसों का गिरना
लपक लपक फूलों सा चुनना
एक थाल में खाना खाना
मधुर हमें लगता था

मिसाल हमारे 'कुल' के भ्रातृप्रेम की
चर्चाओं में रहती थी
उसी कुल के भ्रातृप्रेम में
दीमक लगेगी, में नहीं जानती थी

कहाँ टूटा नेह का धागा
कहाँ खो गयी वो संवेदना
कहाँ छूट गयी वो करुणा
दोष किसे दूँ बुरे वक्त या सोए नसीब को

प्रश्नचिह्न सी तुम्हारी विमुखता
समझ नहीं पाती हूँ
हर पल अपने सम्मुख पा
ठगी सी हतप्रभ रह जाती हूँ

भूल कहाँ हुई इन सबसे भैय्या
तुम्ही अब बतलाओ
चूक कहाँ हुई, परवरिश में तुम्हारी
अब तुम्ही हमें समझाओ

स्वतन्त्रता सेनानी के पुत्रो में
छिड़ा हुआ है मूक संग्राम
झूठी आस लगा बैठी भोली माँ
कृष्ण सा आयेगा बड़ा पुत्र बन भगवान

हे भैय्या इस संकट घड़ी में
संकटमोचन बन आ जाओ
व्यथित माता के दिल में, आस जगा,
माता को बंधनमुक्त कराओ

छोटी बहन की इस उद्दण्डता को
माफ भले मत करना
पर मेरी इस अंतिम पुकार को
अनसुना भी मत करना।

रक्षाबंधन

रक्षाबंधन के पावन पर्व पर
पाती संग भेज रही राखी
बाँध कलाई याद तुम करना
वो बचपन के संगी साथी
वो बचपन की धमा चौकड़ी
वो बाबुल की स्नेह फटकार
वो माता के हाथों की खिचड़ी
जिसमें होता पकवानो का स्वाद
यादों की इन तस्वीरों में
धुँधली पड़ गयी कुछ तस्वीरें
रिश्तों के धागे उलझ गये
कुछ सुलझ गये, कुछ टूट गये
उलझे सुलझे धागों ने भैय्या
बुना कुछ ऐसा ताना बाना
कुछ धागे रंगीन हो गये
कुछ रह गये यू ही रंगहीन
आओ, मिलकर ओढे एक चुनरियां
हम सब ओढें एक दुशाला
टूटे धागों की गाँठों से
आओ बनाए हम एक माला
जीवन के सतरंगों से भैय्या
भर गयी जीवन की झोली
आस यही है टूटे ना भैय्या
रिश्तों की यह रेशमी डोरी।

सपनीली होली

मन बसंती फिजाओं में
महका जा रहा था
तन दहकते पलाश सा
मधुमासों में बहकता जा रहा था
याद है मुझे आज भी
वह पहली सपनीली होली
उमंगों के बादल
उम्मीद की जमीं पर
इन्द्रधनुषी रंग बरसा रहे थे
तुम्हारी पहली नजर की
अनछुई छुअन की सिहरन में
तन मन भीगे जा रहे थे
सोचा था अब हुई, अब हुई
राधाकृष्ण-सी
रसरंग भरी अबीर गुलाल की फाग
जिसमें होगी रसिया पिया की
बहकी बहकी रंगों के बौछार
पर तुम मस्त थे
साथियों की मस्ती में
रंग की भंग की खुमारी में

मैं अभिसारिका बनी
अबीर गुलाल लिए
मन से भीगी
तन से भीगने का
इंतजार करती रही
कान्हा की होली का
सपनीली होली का ।

*

नन्हीं सी फाँस

नन्ही सी फाँस हमेशा
तुम्हारे दिल को सालती रही
कलमकश में जिन्दगी
अनसुलझी चलती रही
साये की तरह खामोश
साथ साथ चलते रहें
किन्तु अपनी अपनी
संवेदनाओं का सत्य
ता उम्र कह ना सके
मेरी छोटी सी भूल, तुम्हारे प्रति
अपनेपन का एहसास था
जबकि तुम उसे अपने प्रति
अवहेलना समझते रहे
जब जब भी फांस की
चुभन का एहसास होता
दिल और दिमाग पर
एक तीक्ष्ण प्रहार होता
खामोशी में उठता एक सवाल
जब प्यार दोनों का ही
पूर्णतः समर्पित है तो

क्यों छा जाती है खामोशी
क्यों चुभती है फाँस
तब गूँजता एक जवाब
फांस बहिरंग है
चुभती तन मन में
खामोशी अन्तरंग है
साथ बहती समर्पण में ।

*

आकृति

दूर समुद्र तट पर
रेत में आकार लेती एक आकृति
कलाकार के मन में
अंकित आकृति
कलाकार की कल्पनाओं से
एकाकार होती आकृति
जिसे वह दिल से
बनाता जा रहा है
उसे मालूम है
कुछ पलो में
समुद्री लहरों में
उसे बहना ही है
बिखरना ही है
फिर भी ना जाने वह
क्यों दीवानगी की
हदों को पार कर उसे
बनाना चाहता है
कुछ नाम देना चाहता है
समझ नहीं पाता है
तभी, दिल से एक आवाज निकलती है
शायद इसे ही
दीवानगी, समर्पण,
प्यार करते हैं।

ये मोती

चाहत के ये मोती
आँखो में बसते हैं
सुख-दुख की घड़ियों में
हँसते हैं, रोते हैं
दिल के समन्दर में
मीलों है गहराई
नैनों में बसती है
चाहत की परछाई
ममता की आँखों से
झर झर ये बहते हैं
बाबुल की आँखों से
गिरके ना बहते हैं
मूछों में छिपते हैं
पलकों पे रुकते हैं
होठों पे मुस्कुराते
दिल में ये रोते हैं
सिसकियों में बसते हैं
हर पल ये छलते हैं
छलकर भी क्यों ये
अपने से लगते हैं।

रिश्ते

रिश्तों में यू ही बँधना
संयोग ही तो है ये
यूं ही साथ-साथ चलते
मन को ये छूते रिश्ते
नजर चुराते रिश्ते
पलकों मे ये हैं छिपते
अनकहे मौन रिश्ते
अनछुए अछूते रिश्ते
जिनकी ना कोई पहचान
जिनका ना कोई है नाम
जिनकी ना कोई मंजिल
जिनका ना कोई मुकाम
मीठा सा दर्द देने
यादों में ये हैं बसते
ख्वाबों में ये हैं सजते
हाथों से ये फिसलते
कुछ पल को साथ चलकर
क्यों छूट जाते हैं ये
तनहाईयों में अक्सर
क्यों याद आते हैं ये ।

संवेदनाओं का सत्य

एक फाँस हमेशा
तुम्हारे दिल को सालती रही
दोनों के बीच का फासला
हमेशा बढ़ाती रही
तुम्हारी खामोशी मुझसे
दिल की बात कह न सकी
मैं भी अपने दिल की बात
तुमसे कह न सकी
एक दिशा में बहते
नदी के दो किनारों की तरह
खामोश साथ-साथ चलते रहे
किन्तु अपनी अपनी
संवेदनाओं का सत्य
ताउम्र कह ना सके
प्यार दोनों का ही
पूर्ण समर्पित था
फिर भी दोनों, आशंकित ही रहे
सतही, तौर पर, ना मिल सके
वह फाँस थी या खामोशी
जो हमें सदा सालती रही
दोनों के बीच का फासला
मिटा ना सकी
नदी के ये दो किनारों की तरह।

नारी मन

नारी मन की थाह
किसी ने ना पाई
किसी के दिल का राज
वह ना छिपा पाई
किन्तु अपने दिल का राज
किसी को ना बता पाई
यही है नारी मन की
अनसुलझी सच्चाई।

*

नन्हें लम्हें

चुराये थे
कुछ नन्हे लम्हें
तुम संग
वक्त की झोली से
छिपाये थे
नर्म मुठ्ठी में
छोटी सी गुड़िया से
याद आता है
वह सिलसिला, जो
सपनों की साजिश रहा
आती है वह सरगोशी आवाजें
खामोशियों के मंजर से
जो लब से कभी
निकली ही नहीं
एहसासों के नम झोंके
छूते हैं नर्म हाथों से
मेरे सर्द चेहरे को
अक्सर तन्हाई में
ये भोले लम्हें,
कहते हें दास्ताँ सम्बन्धों की।

जो हम में कभी थे ही नहीं
फिर भी, पता नहीं क्यों
उन नन्हें, भोले लम्हों की
दास्ताँ सुन
गुडिया सी खुश होती हूँ
पूछती हूँ
उन नन्हें लम्हों से सवाल
कहीं तुम मेरे
सपनों के छलिया तो नहीं ?
छलिया तो नहीं ?

*

सखे तुम

सखे तुम
तनहाई में
मेरे मूक शब्दों को
मुखरित कर
गीत बन जाते हो
सखे तुम
कल्पनाओं की
उन्मुक्त उड़ान में संग चल
मेरे मन को पंख लगा
दूसरी दुनिया में ले जाते हो
सखे तुम
अपने हृदय के सौन्दर्य से
मेरे अन्तर्मन को भिगो
मुझमें प्रेरणा भर
जीने का बहाना बन जाते तो
सखे तुम
अपनी सखी को
बार बार छल
अपनी ही मनोव्यथा में छोड़
अदृष्य हो जाते हो।

मानस प्रियतम

ओ मेरे मानस प्रियतम
क्या सम्भव है तुम बिन
प्राणों का स्पन्दन
नम आँखों में
ओस सा झिलमिलाना
मोती बन फिर उसी
सीप में समा जाना
दुर कहीं क्षितिज के पार
आकाश धरा के मिलन सा
आभास होना, फिर
क्षितिज में समा जाना
ही तो प्रमाण है
तेरे अस्तितव का
तू ही प्रवाह है
मेरे व्यक्तित्व का
ओ मेरे मानस प्रियतम
क्या सम्भव है, तुम बिन
प्राणों का स्पन्दन।

*

अजनबी हमसफर

लम्हा लम्हा
कैद है यादों में
वो अनजान
नि:शब्द सफर
वो साथ-साथ चलते
पैरो की आहट
वो अनकहे बोल
वो अनछुआ स्पर्श
वो स्पंदित धड़कन
वो हलके हलके
गुनगुनाते गीत
वो दिल का दिल से
एक दूसरे तक
पहुँचने का प्रयास
लम्हा लम्हा
कैद है यादों में
जो अब मेरी
साँस बन चुके हैं
इन साँसों को इन्तजार है
उन लम्हों का
शायद फिर लौट कर आ जाए
फिर लौट कर आ जाए, कोई लम्हा ।*

प्यारे-प्यारे दिन

कोई लौटा दे मेरे
प्यारे प्यारे दिन
महकी महकी सी शामें
बहके बहके से दिन
धड़कता था दिल
तुम्हारी आहट से
महकती थी साँसें
तुम्हारी निगाहों से
मन के आसमाँ से
तुम चले आते थे
बेखटक आँगन में आते थे
तुम उतर आते थे
ओस की बूँदों से
तुम झिलमिलाते थे
हौले हौले
सांसों में बस जाते थे
और मैं
अनकहे बोलो में
उलझ सी जाती थी
अनछुए स्पर्शो से
सिमट सी जाती थी।

दिल ये चाहे

मैं और मेरी लेखनी, तन्हाई में अक्सर
तुमसे बातें करती हैं
दिल की बात, लबों से न कह
कलम से कहती हैं

दिल ये चाहे, तुमसे मैं वो सब कहूँ
अपने दिल ही दिल से जो मैं कहूँ
दिल का फैसला है, या जिद है हमारी
कैसे समझाऊं, हाले दिल दीवाने ।।1।।

दिल ये चाहे दो कदम तो संग चलूँ
साथ चलते दिल की धड़कन मैं सुनूँ
दिल का फैसला है, या जिद है हमारी
कैसे समझाऊं, हाले दिल दीवाने

दिल ये चाहे, पुरवईया सी बह चलूँ
तेरे आँगन में हौले हौले मैं बहूँ
दिल का फैसला है या जिद है हमारी
कैसे समझाऊं, हाले दिल दीवाने

दिल ये चाहे, निंदिया बन पलकों में रहूँ
सारी दुनिया की नजरों से मैं छिपूँ
दिल का फैसला है, या जिद है हमारी
कैसे समझाऊं, हाले दिल दीवाने ।

दिल

दिल के बंद दरवाजों से
सरक आते हो कच्ची धूप से
डर लगता है, दिल की बात
अधरों की परिधि से, बाहर न आये

बन्द पलको में
कब तक छुपा रखूँ तुम्हें
डर लगता है, कहीं आंखों से
ये राज ना खुल जाये

तुम तो निगाहों से
कत्ल कर चल दिये
डर लगता है, कहीं चेहरा
गवाह न बन जाये

दिल की चाहत ने
ना जाने क्या क्या सपने देखे
डर लगता है ख्वाबों की तस्वीर
हकीकत में बेरंग ना हो जाये।

हे नारी

हे नारी, हे नारी, सुनो
तुम अबला ना बेचारी
अपने गुण गौरव से
तुम सब पर पड़ती भारी
हे नारी, हे नारी

तुम तो गुणवन्ती हो
तुम तो रूपवती हो
तुम ईश्वर की जननी
तुम हो जगत जननी
तुम ईश्वर के आगे
सीताराम तभी कहलाते
हे नारी, हे नारी

आओ कथा सुनाऊं
कैकयी की बात बताऊं
पर की बातों में आयी
अपना ही मान घटाई
ममतावश उसने जो कीना
दुनिया ने माफ ना कीना

हे नारी, हे नारी

पर की बातों में ना आओ

अपना विवेक जगाओ

अपना अस्तित्व बनाओ

अपना इतिहास रचाओ

सर ऊँचा कर जीना

संदेश यही है देना

हे नारी, हे नारी।

*

भारतीय नारी

धर्मों में बँटा राष्ट्र
पंथो में बँटे हम
भाषाओं में बँटे राज्य
वेशभूषा में बँटे हम
क्या दे पाये
हमें सुखशांति
फिर क्यों ना लायें हम
साँझे चूल्हे वाली क्रान्ति
वेशभूषा है हमारी
संस्कृति को प्यारी
फिर क्या साड़ी
क्या नववारी
हर वेशभूषा में
लगूं मैं प्यारी
क्योंकि मैं हूँ
भारतीय नारी
भारतीय नारी ।

*

नारी

किन शब्दो में दूँ परिभाषा
तुम सम्मुख शब्द अधूरे लगते हैं
शब्दो की अभिव्यक्ति तुम्हीं से
खामोशी का एहसास तुम्हीं हो

सुबह की कुनकुनी सूर्यकिरण तुम
दिन की धूप, गोधूलि की शाम तुम्हीं हो
थके पथिक की अर्धांगिनी
रात्रि का विश्राम तुम्हीं हो

रिश्तों की चादर में लिपटी
ममता का स्पर्श तुम्हीं हो
हवनकुंड की पवित्र अग्नि के
मंत्रो की पवित्रता तुम्हीं हो

सृष्टि के रचयिता के
गुणों का भंडार तुम्हीं हो
शब्दजाल में उलझी सुलझी
शब्द, शब्द की परिभाषा तुम्हीं हो ।

बहिर्मुखी-अन्तर्मुखी-बन्दमुखी नारी

तन की गठीली, मन की हठीली
मुदित मुखी सदा सुखी
कर्तव्यों-जिम्मेदारियों को ही
जीवन का सार मानती
कुछ तीखी, कुछ मीठी
न्याय पथ की पथिक बनती - बहिर्मुखी नारी
अपने कर्मों की किरणो से
जीवन को प्रकाशमान करती
संघर्ष से उत्कर्ष की ओर
बढ़ने का प्रयास करती
किसी के हृदय में
अपनी छवि निहारती - अन्तर्मुखी नारी
अन्याय देखा नहीं जाता
सहा भी नहीं जाता
कुछ कहने के पहले ही
मुख पर आ जाता, क्योंकि
मुख हृदय का अनुकरण जो करता
फिर भी - बन्दमुखी नारी
अकर्मण्य नहीं होती
बार-बार प्रयास करती
अन्याय के विलय के लिए
न्याय की विजय के लिए
अपनी हर श्वास को
आत्मविश्वास में बदलती
बहिर्मुखी-अन्तर्मुखी-बन्दमुखी नारी।

नारी संगठना (व्यंग्य)

नयी नवेली दुल्हन की तरह
नवगठित सामाजिक नारी संगठना
कुछ सकुचायी-सी, कुछ घबराई-सी
सामाजिक संगठनाओं की सार्थकता पर
चर्चा किये जा रही थी
और अपनी ही रौ में
अपने अस्तित्व को मटियामेट किये जा रही थी
चर्चा होती गयी
विषय बढ़ता गया
अन्त में खडे हो कर
सास की तरह नेता ने कहा
अब और बहस ना बढ़ाओ
अपने जीवन को सार्थक
करना चाहते हो तो
सामाजिक, संगठनाओं से जुड़ जाओ।

*

भोली भाली जनता (व्यंग्य)

जनता के मत को लूट
नेता बनते हैं
जनता के मन को लूट
अभिनेता बनते हैं
जनता के धन को लूट
राजनेता बनते हैं
बेचारी लुटी जनता
नेता, अभिनेता, राजनेता की
मनमानी मार सहती है
हर साल छः महिने में
चुनाव का भार सहती है
चुनाव के पहले
स्थिर सरकार की माँग करती है
चुनाव के बाद, हमेशा की तरह
अस्थिर, मिलीजुली, सरकार सहती है।

*

गुड़िया रानी

गुड़िया रानी, लाडो रानी, सो जाओ
मीठे मीठे सपनों में खो जाओ।

फूलों वाली चादर कहती, ओढ़ मुझे तुम सो जाओ
रंग बिरंगी फूलों की दुनिया में तुम खो जाओ
तितली संग बाग बगीचे घूम आओ
पापा की गोलू भोलू सो जाओ
गुड़िया रानी, लाडो रानी सो जाओ
मीठे मीठे सपनो में खो जाओ।

तेरा झूला कहता मुझसे, एक पते की बात सुनो
झूला झूल, लोरी सुन, जल्दी से सो जाओ तुम
अपनी आँखें बन्द करो, तुम सो जाओ
पापा की गोलू भोलू सो जाओ
गुड़िया रानी, लाडो रानी सो जाओ
मीठे मीठे सपनो में खो जाओ।

चाचा तेरे सपनों में आ खेल खिलौने लायेंगे
तुम संग खेल खेलकर, वो भी खुश हो जायेंगे
चाचा संग खेलने को सो जाओ
पापा की गोलू भोलू सो जाओ
गुड़िया रानी, लाडो रानी सो जाओ
मीठे मीठे सपनो में खो जाओ।

पापा थक गये, मम्मी थक गई, दादा-दादी भी थक गये,
बन्दर, हाथी, बिल्ली, भालू तुम संग खेल-खेल थक गये
थोड़ा सा विश्राम करें, हम सो जाओ
पापा की गोलू भोलू, सो जाओ
गुड़िया रानी, लाडो रानी, सो जाओ
मीठे मीठे सपनो में खो जाओ।

*

मेरी लाडो

घर आँगन फूलवारी
गूँज उठी किलकारी
जब से आयी मेरे आँगन
मेरी लाडो प्यारी

रोना मचलना और सिसकना
मन को अकुलाता है
टकटकी लगाये धीमे से मुस्काना
मन को बहुत लुभाता है

नन्हें-नन्हें होठों पर
लम्बी लम्बी सिसकी देखो
छोटे से गले में
गहरी गहरी हिचकी देखो

लगता था बच्चों का रोना
हमें नहीं सुहायेगा
नहीं जानती थी इस रोने से
अनुपम सुख छा जायेगा

मम्मी तेरी तुझको पाकर
आँचल से अमृत पिलाती है
पापा तेरे पुलकित होकर
बाहों को झूला झूलाते हैं

दादी की आँखों का तारा बन
तुम बहुत इठलाती हो
दादाजी के पेट पर चढ़कर
तुम बहुत इतराती हो

चाचा, बुआ भाग भागकर
तुम्हें खिलाने आते हैं
कभी रोकर, कभी सोकर
अक्सर उन्हें सताती हो

समझ नहीं आता, क्यों कहते हैं
लाडो मत आना इस देश
मैं कहती हूँ, हर घर के आँगन को
लाडो बनाना अपना देश।

*

बिदाई

हाथों से फिसलती रेत सी
गोद में खेली बेटी
कब बड़ी हो गई
भान ही नहीं रहा
थामे ना थमा वक्त
आयी वह घड़ी सक्त
भावनाओं को कर जब्त
गोद में खेली बेटी को
ससुराल भिजवाना है
आज अपनी ही परछाई को
बिदा कराना है।

वो भोली सूरत, वो प्यारी मूरत
कभी मचलना, कभी मुस्काना
गोद से घूटनों और
घूटनों से पैरों पर चलना
बस्ता ले स्कूल में जाना
युनिवर्सिटी टापर बन
हमारा मान बढ़ाना
लगता है
कल की ही बात है
हकीकत में
गोद में खेली बेटी को
ससुराल भिजवाना है
आज अपनी ही परछाई को
बिदा करना है।

कभी नाजों से, कभी सक्ती से
पाला है तुम्हें
जाना है ससुराल
जीवन खुशहाल बनाना है तुम्हें
बेटी से पत्नी-बहू का
मान पाना है तुम्हें
इस मान का मान रख
सबके दिल पर छा जाना है तुम्हें
देती सीख तुम्हें यह मां
अपना अस्तित्व बनाना है तुम्हें
गोद में खेली बेटी को
ससुराल भिजवाना है हमें
आज अपनी ही परछाई को
बिदा कराना है ।

हाय री दुनिया की रीत ।
कैसी रीत बतलाई
नाजों से पाली बेटी के
कन्या दान की सीख सिखलाई
कन्या को गौदान सी दान कर
संसार से तरने की राह बतलाई
उफ हाय-दर्द की इन्तहा हो गयी
अखियाँ खुशियों से छलक रही
गोद में खेली बेटी
अब हो चली पराई
आज अपनी ही परछाई
हमसे ले रही बिदाई
आज अपनी ही परछाई
हमसे ले रही बिदाई

यौवन की सीख

यौवन की दहलीज पर
कदम रखते बेटे से
माँ ने पूछा एक सवाल
बेटे क्या तुम
बलात्कारियों के वंश हो ?
कलूषित मन के अंश हो ?
सुन बेटा
हुआ अचंभित !
मौत, निरुत्तर !
माँ ने हौले से कहा
बेटा, याद रखना यौवन की सीख
तुम स्वस्थ समाज निर्माण के अंश हो
तुम ही राम कृष्ण के वंश हो
स्वस्थ समाज निर्माण में
तुम्हें सहयोग देना होगा
वरना, घर घर में
दामिनी की व्यथा होगी
हर किसी की पड़ोसन
फिर कोई दामिनी होगी
कभी तुम बलात्कार करोगे
कभी तुम्हारी बहन बेटी
बलात्कार की शिकार होगी
कलयुग में ना कोई कृष्ण आयेगा
जो सैकड़ों दुर्योधनों से
तुम्हारी अपनी दामिनी को बचायेगा ।

बेटा,

अपने मन की डोर
तुम्हें ही खिंचनी होगी
नैतिकता की पहली सीढ़ी
तुम्हें ही चढ़नी होगी
क्योंकि, तुम अपनी माँ के
पूत हो, सपूत हो
तुम किसी बलात्कारी के वंश नहीं
तुम किसी कलुषित मन के अंश नहीं।

*

बहूरानी

ये ना सोचा था
बहुरानी का आगमन
ख़ुशियों का खजाना होगा
कुछ मीठी, कुछ खट्टी
यादों का सफर सुहाना होगा
सोचा था
हाथ से फिसलती रेत की तरह
बहु संग बेटा भी पराया होगा
ये ना सोचा था
हाथों से फिसलती रेत में से भी
एक नन्हीं परी का आगमन होगा
जो मेरे आंगन में
किलकारियाँ भर, खिलखिलायेगी
मेरे बेटे का बचपन, फिर लौटायेगी
अधूरी इच्छाओं को पूर्ण करायेगी
सच ये ना सोचा था
बहुरानी का आगमन
ख़ुशियों का खजाना होगा ।

*

पल दो पल की जिंदगी

कर्तव्यों को बोझ नहीं
कर्म समझ कर लो
मन को एहसासों से
खुशियों का दामन भर लो
पल दो पल की जिंदगी
हर पल जीना सीख लो
माना सफर नहीं सुहाना
खुशी के लम्हों को नजरबन्द कर लो
जीवन को प्रभु का उपहार समझ
स्वीकार कर लो, स्वीकार कर लो।

*

मैं

विविध नामों से विभूषित मैं
महिला, स्त्री, सूता, अंगना

मैं महिला

महिला
पत्थरों को रत्न बना
श्रृंगार कर तन को सजाती हूँ
फूल, पत्तों, रंगो का महत्व बढा
पर्वो को मनाती हूँ
तुम्हारे जीवन को मंगलमय बना
महिला कहलाती हूँ

मैं स्त्री

स्त्री
स्त्री स्वयं गुनगुनाती है
चहकती सी, महकती सी
घर संसार चलाती है
स्वयं संयमी बन
धर्म, अर्थ, काम, तीनों में
तुम्हें कुशल बनाती है
तब स्त्री कहलाती है

मैं सुता

सुता
अच्छाईयाँ
सुख देनेवाली
निश्छल, निष्कपट, सरिता सी
स्नेह की स्रोत
यानि सुता कहलाती है।

मैं अंगना

अंगना
मात्र अंग नहीं
मेरे अंग के अन्दर
एक मन भी है
कोई खिलौना या देवी नहीं
ना खेलो, ना पूजो
बस झाँको
मेरे मन के झरोखे में

जो तुमसे

तुमसे रिश्ता बना
मातृभूमि, मातृपक्ष को त्याग
जीवन भर साथ निभायेगी
तुम्हारी खुशियों का स्रोत बन
तुम्हें धर्म, अर्थ, काम तीनों में
कुशल बनायेगी
तुम्हारे जीवन को मंगलमय बना
तुम्हें उँचाईयों तक पहुँचायेगी
बस एक बार सच्चे मन से
मेरे मन के अंदर
झाँकने का प्रयास करो
मेरे अंग के सिवा
कुछ और माँगने का प्रयास करो
जो मैं देना चाहती हूँ
जो तुम लेना चाहते हो
मैं ईश्वर की अद्भुत रचना
महिला, स्त्री, सुता, अंगना।

सरिता तट की माटी

पददलित माटी
क्रुर, कठोर
कुदाली की मार खाती
मूक माटी
ना रुदन, ना शोक
ना आह ना याचना, ना प्रतिकार
चल पड़ी
कुंभ का रुप धारण करने
कुम्भकार के संग
समर्पित भाव से
बोरी में भर
घुँघट से झाँकती
नवविवाहिता सी
कुम्भकार, शिल्पी ने
नपा-तुला जल मिला
उसे रौंद रौंदकर
लौंदा बना, चाक पर चढा
घुमा-घुमा, तपा-तपा
अग्नि में जला
राख में बिठा
नवजीवन प्रदान किया
सारी विषमताओं, प्रतिकूलताओं
परिक्षाओं से गुजरती
कसौटी पर खरी उतरती

पददलित माटी
कुंभ का रूप धारण कर
मंगल कलश बन
चल पड़ी
उत्कर्ष की ओर
उत्थान की ओर
लोगों की तृष्णा मिटाने
भीतरी बाहरी पीड़ा मिटाती
दुःख हर्ता, सुख कर्ता
सरिता तट की माटी।

*

मुक्तक

इन खामोशियों से
वह शरारतें भली थीं
तनहाई में कम से कम
ऐसी चुभती ना थी ।।

तुम्हारी खामोशी मुझ पर
सितम पर सितम ढ़ा रही है
तुम्हारी शरारतें तुमसे
प्यार करने को उकसा रही हैं ।।

निगाहों से
कत्ल कर चल दिये
मुड़कर भी ना देखा
कत्ल का अंजाम क्या होगा ।।

परवाना बन जलने का
इतना ही शौक था
किसी और शमा पर मंडराते
अपनी दीवानगी से हमें ना लुभाते ।।

अपनी मीठी वाणी को
शस्त्र ना बनाना
ईश्वर का वरदान समझ
लोगों के दुख दर्द मिटाना ।।

असफलता को याद रख
सफलता को भूल जाते हो
आयी हुई खुशियों को
अपने द्वार से लौटाते चले जाते हो

माना सफलता चूमती
जिन्दगी को पाया है तुमने
कभी-कभी असफलता को
सहज स्वीकार करना सीखो

आँधियों की डगर पर चलकर तो देखो
हवाओं का रुख पलट जायेगा
नये क्षितिज को ढूँढकर तो देखो
आसमाँ स्वयं झुकता नजर आयेगा

संकीर्ण रिश्तों से कोई आस नहीं
उदार जीवन का जिन्हें एहसास नहीं
संकीर्णता निशाकर सी, रिश्तों को चोर बनाती है
उदारता दिवाकर सी, जीवन में भोर लाती है

अपनी सोच से
ग़म को ना बुलाओ
मुक्त विचारों से चेहरे पर
एक मुस्कुराहट तो लाओ

ख़ुशबू की पहचान
तो बहुत है तुम्हें
पर अपनी ही ख़ूशबू से
अनजान हो तुम

जिन्दगी गीत है गुनगुनाना सीखिये
जिन्दगी नृत्य है नाचकर अभिव्यक्त करना सीखिये
नफरत, लड़ाई से कुछ नहीं होता हासिल
प्रेम और प्यार से जिन्दगानी बिताना सीखिये

कभी हवा के झोंकों से बुझ जाता
लबालब दीपक जीवन का
कभी बाती के सहारे चलता
टिमटिमाता सा जीवन कितनो का

अलमस्त सा बचपन बीता
यौवन कामनाओं में जीता
चिन्ता वृद्धावस्था की साथी
चिता तक जो साथ निभाती

जीवन कर्म है, वर्षो का जोड़ नहीं
कर्म या सुविचार है, साँसों की गिनती नहीं
भावनात्मक कृत्य है, घडी के आकड़े नहीं
किसी के प्रति धड़की, दिल की धड़कनों का योग है जीवन

जीवन की मुसीबतों से हारकर
आत्मघात ना कर
जीवन के मर्म को समझकर
सार्थक जीवन जीने का प्रयास कर

सपनों की दुनिया नहीं है ये,
ख्वाबों को हकीकत में उतारा है
प्रभु से मिले हुनर की
चाहत की तस्वीरें है ये

वाह रे इंसान की फितरत
भला ईश्वर की मेहरबानियों को
कहता प्रभु मेरे गुनाहों को भुला देना
मुझ पर अपनी मेहरबानियाँ सदा बनाये रखना ।

क्रोध का आगमन तूफानी
विनाश का वरण करता अभिमानी
क्षमा शीतल पवन-सी हंसगामिनी
सदा दिल में रहती हृदयवासिनी

क्रूर अपराधी को
क्रूरता से दण्डित करना अपराध है
क्षमा कर जीवनदान देना
मानवीय धर्म है, न्यायमार्ग है ।

*

आशीर्वचन

कविता तो कोमल हृदय की विषयवस्तु है, कठोर दिल वाले इसे क्या समझें । जब किसी के हृदय का प्रेम, विरह, कष्ट भावों से अक्षरो में प्रकट होता है तो कविता का जन्म होता है ।

ऐसे ही भावों के जगत को आसमां के काग़ज पर, समुद्र की स्याही से अक्षरों को आकार देकर **"झरोखे मन के"** जो अदभुत रचना की है वह आशीर्वाद की पात्र है । मै इस कृति, कृतिकार व प्रकाशक को अपने अनेकों शुभाशीष प्रदान करता हूँ ।

शुभाशीष

अच्छा लगा, बहुत अच्छा लगा । जो लिखा बड़ा सच्चा लगा ।

– मुनि पुलकसागर